मैथिल भैया करू विचार

Anthology of Maithili Poems

बद्री नाथ राय 'अमात्य'

पल्लवी प्रकाशन

मैथिल भैया करू विचार

मैथिल भैया करू विचार

बद्री नाथ राय 'अमात्य'

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

MAITHIL BHAIYA KAROO VICHAR

Anthology of Maithili poems by Shri Badri Nath Roy 'Amatya'

ISBN: 978-93-93135-46-9
दाम: 200/- (भा.रु.)
सर्वाधिकार © लेखक (बद्री नाथ राय 'अमात्य')
प्रथम संस्करण: 2023

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली,
जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: +91 99316 54742, +91 62006 35563

प्रिन्ट: मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल
फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

दू शब्द

प्रतिभासम्पन्न बद्री नाथ रायजीक कविता संग्रह, **'मैथिल भैया करू विचार'** देखि मन तृप्त भऽ गेल। जेहेन समाज आ जेहेन परिस्थितिक बीच बद्रीजी काव्यक सृजन केलैन अछि, सचमुच पाथरपर दुइभ जनमाएब सदृश्य अछि.! धन्यवाद..

- जगदीश प्रसाद मण्डल

बेरमा, मधुबनी

27 जून 2023

अभिमत

मैथिली साहित्याकाशमे एकसँ एक नक्षत्र भेलाह जे अपना लेखनीसँ मिथिला-मैथिलीकेँ आलोकित करैत रहला अछि। श्री बद्रीनाथ रायजी मैथिली साहित्यक उदयमान नक्षत्रक रूपमे सामने एला हेन। ओना, श्री रायजीक ई पहिल पोथी छिऐन, मुदा ओ बहुत पहिनेसँ मैथिलीमे कविता, गीत, कथादि लिखैत रहला हेन।

प्रस्तुत पोथीमे कवि बद्रीनाथजी मिथिलासँ जे लोक रोजगारक लेल पलायन कऽ रहल हेन तैपर चिन्ता प्रकट केलैन अछि। एकटा कविताक माध्यमसँ हिनकर कहब छैन जखन हम सभ मिथिलावासी छी तखन जाति-पाति की, हम सभ एक जाति छी, सभ मैथिल छी। एकटा कविताक मादे कवि मिथिलामे दहेजक खातिर नारीपर भऽ रहल अत्याचारकेँ उजागर केलाह हेन।

एकटा कवितामे कवि विवाहिता नारीसँ अपन सासुरक हाल आ अपन बेथा अपना सखीसँ कहबै छथिन, देखल जाए-

“की कहियौ बहिना हम
ससुरा के हाल गे।
साउस हमर सूर्पनखा
ससुर हमर काल गे।।”

‘अनाड़ी वर’ कवितामे कवि एकटा विवाहिता युवतीकेँ अनाड़ी आ मूर्ख पति रहलासँ केना सभ मनोरथ जरि जाइ छै, तइकेँ चित्रण केलखिन हेन। जाग-जाग सुच्चा मैथिल जाग कविताक माध्यमसँ कवि सुच्चा

मैथिलकेँ ललकारि रहल छैथ। हुनक कहब छैन कतेक दिन सुतबेँ, आबो तँ जाग आ अपन अधिकार ले। तोरा अपन अधिकारक लेल अपने लड़ए पड़तौ, तब जा कऽ अधिकार भेटतौ। द्रष्टव्य अछि-

"मुँहमे तोरा खुआ देतौ के?
सभ छै अपने भूखल।
नहि खेबही अप्पन हिस्सा त
भेटतौ रूक्खल सूक्खल।।"

'बेटी बापक सन्ताप' कवितामे एकटा बापकेँ बेटी विवाहमे की-की फिरीशानी होइ छै तइकेँ वर्णन केलखिन हेन। कविक कहब छैन- बेटीक बाप भेनाइये एकटा सन्ताप छै। निम्न पाँतिकेँ देखल जाए-

"दुष्ट दहेजक उपनिवेशमे
हमहूँ छी बेटी केर बाप।
बेटी जनम लेलक तहियेसँ
सहि रहल छी सभ सन्ताप।।"

'हमहूँ धनि छी प्यासलि' कवितामे कएटा ओहन नारीक बेथाक वर्णन केलाह हेन जिनकर पति भरल जवानीमे पत्नीकेँ छोड़ि परदेश चलि जाइत अछि आ बहुत दिन धरि पत्नीक सुधि नइ लैत अछि। ऐ पाँतिसभकेँ देखल जाए-

"सावन प्यासल भादो प्यासल,
हमहूँ धनि छी प्यासलि।
आब पहुँ जँ नहि घर औता,
यौवन हमरो भासल।।"

के करत मिथिलाक उद्धार कवितामे कविक कहब छैन जे मिथिलामे आब सपूत नहि अछि जे मिथिलाक उद्धार करत। मिथिलाक कला, संस्कृति, आचार, बेवहार सभ विलुप्त भेल जा रहल अछि। केतए गेल ओलक चटनी? केतए गेल अचार आ तिलकोर पातक तरूआ?

‘एतबे अछि अभिलाषा’ कविक व्यंगात्मक कविता छिऐन। ऐ कविताक मादे कवि वर्त्तमान बेवस्थापर कड़गर चोट केलाह अछि। प्रशासनमे व्याप्त भ्रष्टाचार, शिक्षामे शिक्षाक स्तर गिरावट, घूसखोरी आ चमचागीरीपर सेहो चोट केलाह हेन।

पोथीक सभ कविता बेस रूचिगर अछि। कविकेँ बहुत-बहुत साधुवाद। आशा अछि श्री बद्रीनाथ राय जीक ऐगला पोथी सेहो जल्दीए सामने आएत।

नन्द विलास राय

मो. 9931909671

भपटियाही सखुआ

20-05-2023

कविवर बद्रीनाथ राय जीक मादे

कविवर बद्रीनाथ राय 'अमात्य' जीके पाँच दर्जन काव्यके मैथिली पोथी 'मैथिल भैया करू विचार' मेँ एके शिर्षक कवितासँ अध्द्र्शतक धरि देखलौं पढ़लौं। श्रीराय जीक कविता वस्तुत: मंचीय- गेयातत्मक बुझाइछ। मिथिलाक किछु गायक अपना अन्दाजमे एहिमे सँ गौउने छथि। हिनक काव्य रचना अत्यन्त सौष्ठव भेल छन्हि। प्रस्तुत पोथी 'मैथिल भैया करू विचार' संग्रहमे भावक अविरल आओर अजस्त्रधारा प्रवाहित भेल य। कलाके विचार भाव नैयका आ मौलिक दृष्टिगत होईछ। हिनक कविताकेँ सम्पुष्टि दैत अनेको कविजनकेँ लघु आ दीर्घाकार कवितासँ मूलभूत तुलना कएल जा सकैछ। पाठककेँ विविध शिर्षकसँ कविता पढ़ैमे आओत , जाहिमे रस अलंकार आ छंद लालित्य बुझाएत। एहि पोथीके हाथ लगेबाक माने भेल जे आद्य:उपरान्त शिघ्रे पढऐय बिना रुकि नै सकैत छी। एहि निहितार्थ वरेण्य साहित्यकार श्री नन्द विलास राय जीक समीक्षात्मक तथ्य सेहो पुष्टि करैत छैक। स्वयं बद्रीनाथ बाबू अपन अभिमतसँ कविताक रचना सन्दर्भमे सांगोपांग व्याख्या कयनहि छथि। कविताक रोचकता सेहो सहजे बूझिमे आबि जाएत। समसामयिक विषयपर पाँति गढ़ैत रायजी निमग्न भऽ गबैत छथि। यथा पाँति देखल जाऊ-

पालक परम कठोर भेल अछि
मुदा विकासक शोर भेल अछि।
अपने रान्हल तीसी तीमन
नोनगर करूगर जोर भेल अछि।।

मिथिलाक समृद्धि तखने होएत जहन एतुका सर्वहारा वर्गक लोककेँ बेरोजगारी खत्म होइ-

हकन कनैए मिथिला धरती

जनमानस लाचार बहुत छै ।

बाउ विकाश विलम्ब जुनि करियौ

खाली हाथ बेकार बहुत छै।।

मिथिलामे मैथिलीक नामपर किछ जरदगव अपना वर्ग आ जातिक नहि, वरन् बिनु परवाह कयने अपन गोतिया आ गोधिंयापनिक चलाकीसँ एक गुट ठाढ़ केने छैक। ताहिक वर्चस्ववादी संस्कृतिपर व्यंग करैत कवि पाँति लिखने छथि-

माला मंच माइकमे मिथिला

माथमे चाही ललका पाग ।

आब सुधरि जो निर्लज्जा तूँ

गत्तर गत्तर लगलौ दाग।।

मंच- माइक- माला पहिर खूब नितराइत, यशस्वी बनैत ,दीपके ईजोत पसारबाक आकर्षक पेनी देखू तँ अन्हारे आ हहाकारे केने छै । से व्यक्तिगतो जीवनमे कनेक यश बटोरने रहनाय मनुखता हैत! तेँ कवि कटाक्ष करैत ई पांति देलनि-

लात खाइतमे उमर बितल छौ

गारि सुनैतमे पकलौ केस ।

तन्द्रा के तूँ त्याग पतितहा

देहमे नहि छौ लाजक लेश।।

भारतीय नागरिककेँ विशेष कय लेखकीय काजमेँ लागल कलमवीर केर दू गूट-एक वामपंथ तँ दोसर दक्षिण पंथमे बँटल देखल जाइछ, से हदघरी मानसिकता आधारपर बँटले बुझाइछ। मुदा संतुष्टि कतौ नै छइ? यथा-

राजनीतिक दलदल के कारण

सबहक मनमे रार बहुत छै ।

अपना मनसँ सब सिन्धु छै

देखलहुँ सुख्खल धार बहुत छै।।

मिथिलांचल प्रायः रौंदी (अकाल) आ वाढिमे त्रस्त रहैत छैक। सरकार दिशसँ सरकारी कर्मी आ त्रि-स्तरीय पंचायती राजक जनप्रतिनिधि राहत सूची लाभार्थी लेल बनाबयमे घोर अनियमितता करैत खूब धन डेकारैत छैक। निगरानी जाँच दल सेहो वादमे मालामाल होईछ,आ हाथी तँ दहा जाइछ मुदा चीरै दू बूँन जल बिना बंचित रहि जाइछ। एहि मार्मिक दृश्यके चित्र खींचैत कवि समानताक लेल बेकल देखाईछ। यथा-

चास बास संसाधन रहितहुँ

सब कनहापर भार बहुत छै।

पीपड़ पाखरि के मोजर नहि

छाँवहीनटा तार बहुत छै।।

छै समाजमे बहुत विषमता

भ्रष्टाचार विकार बहुत छै ।

किछुए के चुनरी मलमल छै

बाँकि लोक उघार बहुत छै।।

अपन कविताक उपयोगिता मादे कविजी घोषणा करैत छथि। यथेष्ट पढल- लिखल आ अफसर बनल मिथिलाक बेटा जे शहर नगरमे रहि पैघौत झाड़ैत छथि से आब गाम घरक मैथिल सन मैथिली बजनिहार नहि छथि। ओ आब अपन परिबारिक धियापुतासँ अंगरेजीये हिन्दीमे वार्तालाप करैत अपनाकेँ श्रेष्ठ बुझैछ आ मिथिला मंचपर मैथिली लेल नोर बहबैत रंगल नढ़िया बनल देखाईछ,से ऐ पांतिमे स्पष्ट लौकैत अछि-

माँ मैथिली हमरा कहलनि-

जे पुत छथि पढल - लिखल नहि

खूबे ओ देलनि सम्मान ।

पूत हमर जे पढल लिखल छथि

माँ नँय बुझलनि, बुझलनि आन।।

मैथिली साहित्य आन्दोलनमे हिनक योगदान लेल हम अभिभूत छी। दिव्य- दृष्टि मैथिली भाषा पोथीमे सेहो हिनक काव्यके चर्चा हम कयने रही; सेहो हुनक जन्मदिनक सुअवसरपर। इति।।

-लालदेव कामत

लेखक एवं पत्रकार

प्राक्कथन

मैथिली जगतमे एकसँ बढिकय एक साहित्यकार भेलाह, जे मैथिली साहित्यिक विकास लेल अपन लेखनीकेँ गति दैत रहलाह। एहि क्रममे श्री बद्रीनाथ राय 'अमात्य' उदीयमान नक्षत्र रुपमे सोझा अयलाह अछि। हिनक कविता बरबरि फेसबुकपर अभरैत रहल अछि। हिनक रचनामे मुख्य रूपसँ मिथिलाक समस्या उजागर होइत रहलनि। कतेको काव्य हिनक व्यंग्यात्मक होई छन्हि, जे पाठककेँ कविता विधा दिस सहजे आकृष्ट करैत अछि। प्रस्तुत पोथी 'मैथिल भैया करू विचार'मे 'एतबे अछि अभिलाषा' कथा-कविता मादे श्री रायजी कहैत छथि-

हेहर - थेथर , आंकड़- पाथर

भ्रष्ट शिरोमणि मुखिया भेल ।

सुगरक खुरके पूजा होइए

कुक्कड़क मुँह गमकौआ तेल।।

वर्तमान पंचायती राज व्यवस्थाक जे परिवेश बनल जा रहल अछि, ताहिमे ई कविता रोचक ओ सटीक बुझाइछ।

एकटा कवितामे कविजीक कहब छन्हि, जहन हमसब मिथिलावासी छी, तहन जाति- पाति,धर्म सम्प्रदाय की? सब एके जाति - एके धर्म आ एके सम्प्रदायक छी; सब मैथिल छी। यथा, पाँति द्रष्टव्य-

हम जातिके छोड़ि देने छी

अहूँ जातिके छोडू भाय।

आऊ एके पांतिमे बैसि,

भुखल छी? तँ खाऊ मिठाय।।

कविवर रायजी आत्मकथा नामक कविता मादे अपन जीवनक व्यथा कथा रखलनि अछि, जाहिमे कैंचाक अभावे सोचल लक्ष्य नहि भऽ पबैत छैक! यथा-

अर्थक हीन मनोरथ सबटा

छल सपना सपने रहि गेल।

देखब कहिया दिन सुदिन हम

दग्ध हृदय जरिते रहि गेल।।

छल द्वेष दंभसँ दुषित समाज

उपहासे मात्र करईए ।

मन मारि अपमान सहै छी

झर - झर नोर बहाए।।

प्रस्तुत मैथिली साहित्य पोथी 'मैथिल भैया करू विचार' संग्रह'क सब काव्य बेस उपरा-उपरी अछि। आशा अछि पाठककेँ चहटगर लगतन्हि।

कवि श्री रायकेँ बहुत - बहुत साधुवाद, हिनकर अगिला पोथी शिघ्रे सामने आओत एहन आश रखैत छी।

शुभ कामनाक संग

-शम्भू नाथ मिश्र

प्रबन्ध सम्पादक-कोसी

सन्देश पत्रिका (त्रिमासिक)

शुभ कामना संदेश

कोनू साहित्यकार'क लेल समानधर्मा अनुसंधाताक सह अनुभूति'क अभिव्यक्ति कवि लेल उपलब्धि होइछ आ ओहिमे मणि कांचनक' संयोग बनि जाइत अछि।

हमर परमप्रिय सहृदय बन्धु कविवर बद्रीनाथ राय 'अमात्य' केर आकांक्षा छन्हि जे कियो परिश्रमपूर्वक अध्येता भेटथि आ एहि साहित्यक अतल गहींरपनमे उतरिकय मैथिली केर सम्यक पोथीकेँ पढ़ि आनन्दक अनुभव करय। हमरा लगैत अछि, हुनक सपना आइ साकार हुअ जा रहलैन अछि। काव्य जगतकेँ प्रचुर प्रतिभा सम्पन्न वरिष्ठ कवि रायजी जीवन पर्यन्त जे रचना कयलन्हि ताहि निष्ठा आओर एकान्त समर्पण भाव केर कृतित्व आ व्यक्तित्वक अध्ययन भविष्यमे कियो महानुभाव करैत एक अनुशीलन धरि शोथग्रन्थ रूपेँ करताह, जे एक शोधार्थी लेल सर्जनाक सन्दर्भमे प्रमाणित दस्तावेज बनि जाएत।

एहेन विलक्षण "मैथिल भैया करू विचार" पाँति अस्तित्वमे आनि समाजक मार्गदर्शक बनय लेल आगू बढ़बैत परियासकेँ हम शुभाशंसा करैत आन्तरिक सहयोगक संग, हार्दिक बधाइ दैत छी।

प्रो. लक्ष्मीनारायण राय

पूर्व प्रधानाचार्य,

के. एन. एस. जे. कॉलेज, सरौती, मधुबनी।

सम्पर्क- ग्राम: जमैला, पत्रा.: मदना, भाया: अन्धराठाढ़ी,

जिला मधुबनी

पिनकोड: 847402

मो. 8809517045

अप्पन बात

मिथिलांचलक मधुबनी जिला अन्तर्गत खजौली थानामे एकटा गाम अछि, नाओं छिऐ 'करमौली। ओही करमौली गामक एकटा किसान परिवारमे हमर जन्म 24-06-1963 कैँ भेल। चारि भाइक भैयारीमे हम दोसर नम्बरपर छी, कहबाक मतलब हमरासँ एक भाय जेठ आ दू भाय छोट अछि। ओना, हमरा चारू भायसँ जेठ एकटा बहिन छथि।

हमर पिताजी स्व. जयदेव राय सातवाँ तक पढ़ल रहथि, जखनकि माए सोलह दूना आठ, यानी बिल्कुल निरक्षर। हमर पिताजी बेस धार्मिक प्रवृत्तिक लोक छलाह। पूजा-पाठमे विश्वास छेलनि तँए प्राय: दू-दू घन्टा पूजा करैत रहथि।

हमरा प्रारम्भिक शिक्षा मध्य विद्यालय कपड़िया (खजौली) सँ प्राप्त भेल। कपड़िया मध्य विद्यालयसँ सातवाँ वर्ग उत्तीर्ण भेला पछाइत उच्च विद्यालय मलहरिया वागनगर (जिला- पूर्णिया)मे आठवाँ वर्गमे नाम लिखेलहुँ। चूकि हमर पीसा स्व. हीरालाल राय मलहरिया वागनगर उच्च विद्यालयक प्रधानाध्यापक रहथि। दोसर कारण ई जे हमर पिताजी हमरा सातवाँक बाद पढ़बैसँ लाचार छलाह तँए हमर पीसा हमरा अपना लग राखि मैट्रिक तक पढ़ेला। पीसे लग रहि मलहरिया वागनगर उच्च विद्यालयसँ मैट्रिक पास केलौं।

मैट्रिक पास केलाक पछाइत इलाहावाद हिन्दी विद्यापीठसँ साहित्य रत्न प्रथम भाग उत्तीर्ण केलौं। 1988 ई.मे हमर विवाह भऽ गेल आ 1991 ई.मे हमर पत्नी द्विरागमन भऽ करमौली आबि गेलीह आ सासुरमे रहए लगलीह।

जीवन यापनक लेल हम सरकारी नौकरीक लेल बड़ परियास केलौं मुदा सरकारी नौकरी नहि भेटल। पछाइत आजीविका चलाबए लेल

कलकत्ता गेलौं। कलकत्तामे कोठी-बाड़ीमे सुरक्षा प्रहरीक काज कऽ गुजर करए लगलौं।

1988 ई.सँ हिन्दी आ मैथिलीमे किछु-किछु तुकवन्दी कऽ कविता लिखै छेलौं। जखन कलकत्तामे रही तँ हमर आलेख सन्मार्ग दैनिक समाचार पत्रमे छपैत छल, ओना रजनीमुख दैनिक समाचार पत्र नागपुरमे सेहो किछु रचना छपल। पछाइत मिथिला दर्पण, पकठोस आदि पत्रिकामे सेहो रचनासभ छपल।

वर्त्तमानमे हैदराबाद-सिकन्दराबादसँ प्रकाशित स्मारिका देसिल बयनामे हमर कविता प्रकाशित भऽ रहल अछि।

2019 ई.मे बेटी विवाहक मादे घंघौर (प्रखण्ड- बाबूबरही, जिला, मधुबनी) गेल रही। ओतए हम अपन सम्बन्धी श्री रामवालक काका ओहिठाम ठहरल रही। एक दिन हम अपन कमीज धोइसँ पहिने कमीजक जेबीमे सँ सभ कागज निकालि चौकीपर राखि देने रही। दलानक आगाँ चापाकलपर हम कपड़ा धोइत रही, तखने जोरसँ हवा बहल आ चौकीपर रखलाहा हमर सभ कागज उड़िया गेल। श्री रामवालक काका दालानेपर रहथि ओ हमर सभ कागज बिछि कऽ ओरिया कऽ राखि देलखिन। ओइ कागजमे सँ एकटा कागज खोलिकऽ ओ पढ़ए लगलाह। हम कपड़ा धोइत रही। रामवालक काका ओ कागज नेने हमरा लग एला आ हमरा पुछलनि, ई कविता किनकर लिखल छी?

तैपर हम कहलिऐन- अहींक भातीजक लिखल कविता छी।

तैपर ओ बड़ खुश भेला आ कवि सम्मेलन सभमे भाग लेमए लेल कहलनि। तीन दिनक पछाइत जिला पुस्तकालय मधुबनीमे कवि सम्मेलनक आयोजन छल। ओहि कवि सम्मेलनमे हमहूँ अपन कविता पढ़लौं। हमरा कवितापर बड़ थोपड़ी बाजल रहए। ऐगला दिनक हिन्दुस्तान समाचार पत्रमे हमरो नाओं छपल। ऐ बातक सूचना हमरा रामवालक काका फोनपर देलनि। पछाइत कवि सम्मेलन सभमे भग लेमए लगलौं। जखन 2021 ई.सँ पुन: दिल्लीमे रहए लगलौं तँ दिल्लीमे सेहो आयोजित कवि सम्मेलन सभमे भाग लेबए लगलौं।

हमर कविता सुनि किछु साहित्यकार मित्र, सर-कुटुम आ शुभचिन्तक लोकनि पोथी छपेबाक लेल प्रेरणा देलनि जाहिमे श्रीमान् जगदीश प्रसाद मण्डल, ई. श्री रामवालक राय (घंघौर), श्री नन्द विलास राय (भपटियाही-सखुआ), श्री लालदेव कामत (नौआबाखर, श्री रामश्रेष्ठ राय (घंघौर), श्री राजा बाबू (जबदी), श्री रविकान्त शास्त्री (मंगरौना), श्री वीरेन्द्र कुमार राय (जेलर साहब), श्रीमान् केदारनाथ भण्डारी (भलनी), श्री मूरारी मैथिल मालाकार, श्री रोहित यादव, श्री विन्देश्वर राय विवेकी (नवकरही)क नाओं उल्लेखनीय अछि। हिनका सभक प्रति हृदयसँ आभार, सभकेँ नमन।

श्री उग्रेस राय (करमौली), श्री महेन्द्र राय (लोहना), श्री रामकृष्ण परार्थी, श्री राम नरेश यादव, श्री कमलेश राय (फुलवरिया) आ श्रीमती पूनम झा 'सुधा', सूर्यदेव राय- मंगरौना, उमाकान्त राय- धरमबोन ठाढ़ी, हरेन्द्र राय- धुआबे भागलपुर सभक सेहो अभारी छी, किएक तँ ई लोकनि पोथी छपेबाक लेल प्रोत्साहित केलनि। हिनका लोकनिकेँ साधुवाद।

अखिल भारतीय आमात्य सुमन्त समाज नई दिल्ली केर नैतिक एवं आर्थिक सहयोगसँ पोथी प्रकाशनक बाट प्रशस्त भेल। सुमन्त समाजक सभ सदस्यक प्रति हृदयसँ आभार, सभ सदस्यकेँ साधुवाद।

श्री नन्द विलास राय (भपटियाही-सखुआ) हमरा पोथीक शाब्दीक अशुद्धि दूर केलनि ताहि लेल हिनका प्रति अशेष साधुवाद।

बद्री नाथ राय 'अमात्य'

मो. 6205190859

स्थान : करमौली

20-05-2023

काव्य-क्रम

दीनक दुपहर/23
एतबे अछि अभिलाषा/24
पृथक देह अछि एक्कहि माइ/29
चोरे सभ मुँहजोर भेल अछि/30
हे जननी जनम कथी लेल देलिऐ/31
झरकल मुँह झाँपिकऽ राखू/32
फैशन/33
हम मैथिल छी/34
बनलो बात बिगड़ि रहलैए/36
एकटा बात पूछै छी मैथिल/37
मैथिल भैया करू विचार/38
सगरो पुष्पित अछि विष वेल/39
मिथलामे सरकार कहाँ छै?/41
मिथिलाक गति/42
मैथिलसँ अपील/43
दहेजक लोभी/44
जीवन भेल पहाड़/45

सासुरक हाल/46
सभटा दुख दहेजक कारण/48
अनाड़ी वर/49
भव्य दिव्य अछि भाल/51
गत्तर गत्तर लगलौ दाग/53
जाग-जाग सुच्चा मैथिल जाग/54
बेटी बापक सन्ताप/55
आत्मकथा- 01/57
हम की करब/61
हम धनि छी प्यासलि/63
उमरल नेहक धार/65
मिथिला राज केना लेब/66
हम मैथिलक झरूआ छी/67
सहब आब नहि अत्याचार/68
स्वामी नहि हम सेवक चुनव/69
गीत विकासक लगनी/70
नीनमे सुतल सरकार/71
मैथिलक दशा/73
देह मुदा दू दोबर छै/74
बेरि-बेरि हम नमन करै छी/76
अपने करू अपन उद्धार/76

हम जागल छी/77
मिथिलाक मैथिली/79
अपनो कने विचारब/80
मन होइए त्यागि दी/81
हम संघर्ष करैत रहब/82
दामी चुनरी/83
तखने भेटत मिथिला राज/85
मर्मक बात/86
व्याकरण विष लगैए/88
संकट मोचन/88
हमहीं टा होशियार मात्र छी/89
कौआक पनचैती/91
मिथिलाक गरिमा/93
हमर व्यथा/94
सावन बीति रहल अछि/95
मैथिल के?/96
सपनामे हम देखने छेलिऐ/98
मिथिला महात्म्य/99
गोत्र अछि विद्वानक हमरो/100
देखब हम सासुर केर भाड़/102
मैथिलीक महत्व/105

केतए नुकाएल छी/106
इतिहासक अनुपम पन्ना/108
मुदा आब सभ जागि गेल अछि/110
हमर मनोरथ/112
बेटीक व्यवहार/114

दीनक दुपहर

जेठक दुपहरिया पछबा बसात।
डाहि रहल विरहिनक शिशु नवजात।

शैशव छै दग्धल; पियासल छै प्राण
विपदाके मारलपर; भूखक लगाम।

पाथरक मनुआँ लए मालिक गवाँर
फुटहाक जलखैपर माथा सवार।

ठण्ठक छै कण्ठ सूखल, मालिक मुख पान।
समाज व्यवस्था पंचम छै वेढ़ब विधान।
गरीबीक खमहामे बान्हल छै प्राण।
फुसिञे कहाबै छै भारत महान।

के देशकेँ आजाद कए केलनि एहेन भूल?
डारि डूबल छै दूधक गंगा, प्यासल एखनो मूल।
सरस्वतीकेँ गुदड़ी लटकल, लक्ष्मी के तनमे पटोर।
एकसरि राधा रासलीन छथि, विरहिन नयना नोर। ❑

एतबे अछि अभिलाषा

देश विकाशक; नगर समाजक,
कथा मार्मिक सुनबै छी।
केलौं अछि उपलब्धि हम जे,
से सबटा हम गनबै छी।।

हेहर थेथर आँकड़ पाथर,
भ्रष्टशिरोमणि मुखिया भेल।
सुगरक खुँर-के पूजा होइए,
कुकड़क मुँह गमकौआ तेल।।

कनहा कुत्ता प्रतिनीधि अछि,
गिद्ध बिलाइ विचारक।
हरियर-हरियर फसिल चरैए,
साँढ़ समाज सुधारक।।

नहि पौरुष नहि पगड़ी माथमे,
ताञि राजनीति स्तरहीन।
सत्ता सुन्नरि विलासितामे,
भाँङ खाय सूतलि अछि नीन।।

सोलह सिङार कुतिया मुखमण्डल,
आँखिमे काजर लाली ठोर।

अंगप्रदर्शन करैत चलैए,
ऐंठि नगरमे पहीरि पटोर।।

अनहरियाक जन्मल बालक,
अनहरियामे करैए खेल।
अनहरिया केर पूजा होइए,
बिनु बाती दीपक ओ तेल।।

साँढ़ पहिरने खाधी कुर्ता,
कुम्भकरण सन ढेकरि रहल अछि।
जिन्दापर अधिकार ओकर छै,
मुर्दा खाकऽ अकरि रहल अछि।।

कौआ मेना शिक्षक भेल अछि,
गिद्ध सियार अधिकारी।
शिक्षा क्षेत्रकेँ चरलक सभटा,
भ्रष्ट साँढ़ सरकारी।।

अर्थे टा सँ छनि अपेक्षा,
कहबै छथि अध्यापक।
ज्ञान अधुरा बाँटि रहल छथि,
नहि विचार छनि व्यापक।।

चोटी चानन हकन कनैए,
दाढ़ी बैसल कोड़ामे।
राम रहीमक राजनीति अछि,
लागल लोक निहोरामे।।

मुक्ताचारी गगन विहारी,
वाहन व्योम विहारमे।
भ्रष्टाशिरोमणि उँच्चासनपर,
बैसल अछि सरकारमे।।

जाति धर्म आऔर भाषा क्षेत्रक,
जन-जनपर अधिकार जमौने।
चाटुकार हमहीं छी दोषी,
प्रतिनिधि परिवेश घिनौने।।

प्रतिनीधि पतित बनि बैसल,
आँखिमे हुनका मोतियाबिन्द।
नैतिकता के बेचि खेने छथि,
सूतल छथि कुंभकर्णक निन्द।।

चौंसठ आवरण अंगप्रदर्शन,
विषवाला सन बनि घुमैए।
प्रणय घड़ीमे प्रणय निमंत्रण,
कुत्ताकेँ ललकारैत दइए।।

मन्दिर-मस्जिदक झगड़ामे,
विद्या-वैभव भेल समाप्त।
भ्रष्टाचारक मेघ लगैए,
सगरो अछि अनहारे व्याप्त।।

अर्थ प्रतिष्ठित अर्थक भूखल,
पौरुषक ललकार दैत अछि।

हम यदि किछु बाजऽ चाही,
नहि बाजक अधिकार दैत अछि।।

जनम-जनम केर भूखल प्यासल,
प्रतिनीधि आऔर पंच बनैए।
नंगा ओ भीखमंगा मिलिकऽ
बाढ़िमे व्योम विहार करैए।।

देह पेट जेकरे छै भूखल,
बनल प्रमुख प्रखंडक।
सतहन्ता सरपंच बनल अछि,
ताञि विकाश अछि बन्धक।।

पाप पचाबऽमे जे सक्षम,
पंचैतिया अछि भेल महान।
वुद्धिजीबी विद्वान कात छथि,
पायबला परसैए ज्ञान।।

भ्रष्टाचारक भूसा खाकऽ,
भैंसा कागभुसुन्डी भेल।
विधि विधान अछि विधवा बुढ़िया,
नगरवधू सतवन्ती भेल।।

आइ अन्हार इजोतकेँ घेरने,
माङि रहल रंङदारी।
शिखर शीर्षपर रावण बैसल,
सीता विकल बेचारी।

लाठीपर अछि टिकल लोकतंत्र,
जन-जन छथि लचरल लाचार।
भारत भाग विधाता लिखलनि,
ठुठ लेखनी हमर कपार।।

राजनीतिमे भेड़चार अछि,
पृष्ठक पोषक धूर्त सियार।
ध्वजाक वाहक बेचि खेलक अछि,
सत्ताकेँ चुनरी सलबार।।

शिक्षा विभागमे पात्र अशिक्षित,
स्वास्थ्य विभाग बिमार पड़ल।
चाटुकार आऔर चमचा चारण,
चलबैए सरकार मरल।।

राजनीति अछि सुगरक झगड़ा,
विष्ठापर अधिकारक।
अपन पेट आऔर विलासिता लेल,
संरक्षक संहारक।।

जे पेटु अछि भरल प्रपंचे,
उदरकुण्ड छै खाली।
विष्ठापर अछि घात लगौने
ज्ञानक वैभवशाली।।

निर्लज नीच जीभ कुक्कुर सन,
अछि ज्ञानक पपियाहा।

वएह समाजक शिरोमणि अछि,
भोज खौका जिबलाहा।।

हमर घर अनहारक राजमे,
अछि इजोतक आशा।
कहिया देखब पूर्ण चन्द्रमा,
एतबे अछि अभिलाषा।। ❑

पृथक देह अछि एक्कहि माइ

हमर रक्त मिथिला पॉजीटिव
अहाँक रक्त की? कहू यौ भाइ।
अहूँक रक्त जँ हमरे सनकेँ
तखने पियब पिया देब चाय।।

हम जातिकेँ छोड़ि देने छी
अहूँ जातिकेँ छोड़ू भाइ।
आउ एके पाँतिमे बैसी
भूक्खल छी? तँ खाउ मिठाइ।।

हम मिथिला-के रंङ घोरै छी
उज्जर केश करा देब डाइ।
अहींक संग सम्बन्ध सनातन
पृथक देह अछि; एक्कहि माइ।।

अप्पन हिंस्साकेँ नहि छोड़ब
अनकर हिस्साकेँ जुनि खाइ।

जे जमीन पहिने भेटल छल
से जमीन नहि भेटत भाइ।।

मिथिला राज ओना नहि भेटत
हमर पैरमे किएक बेमाइ?
हमर बेमाइ केर की दबाइ छै?
सेहो निदान किछु खोजियौ भाइ। ❑

चोरे सभ मुँहजोर भेल अछि

कनिते-कनिते भोर भेल अछि
जीवन यौवन थोड़ भेल अछि।
पेय हमर निज नोर छेलै से
सेहो आब इनहोर भेल अछि।।

चोरे सभ मुँह जोर भेल अछि
हमरे कारी ठोर भेल अछि।
चोरबा हमरे नोर पीबिकऽ
देखियौ बहुते गोर भेल अछि।।

वीर पुरुष रणछोड़ भेल अछि
कहू केहेन गठजोड़ भेल अछि।
पौरुष जे हथियार हमर छल
सेहो आइ कमजोर भेल अछि।।

पालक परम कठोर भेल अछि
मुदा विकासक शोर भेल अछि।

अपने रान्हल तीसी तीमन
नोनगर करुगर झोर भेल अछि।।

सेवा निष्ठा त्याज्य भेल अछि
शकुनी केर साम्राज्य भेल अछि।
साक्षी रखलौं पंचतत्वकेँ
हमर अधोगति भाग्य भेल अछि।।

पामर पावन पूज्य भेल अछि
ज्ञानक पीठ अशुद्ध भेल अछि।
हमरा तँ अनहार लगैए
वंचक लेल सायुज्य भेल अछि।।

कर्म हमर किछु हीन भेल अछि
तँए नियति आइ क्षीण भेल अछि।
भ्रष्टाचारक भीष्म पितामह
पीन आओर पाठीन भेल अछि।। ❑

हे जननी जनम कथी लेल देलिऐ

हे जननी जनम कथी लेल देलिऐ
जीवन नोरे बितलै ना...
रंग बीच बेरंगे रहलौं
माइक माया नगरी।।
जीवन बितलै नोरे हमरो
नोर भरल अछि गगरी।।
जीवन कोरे बितलै ना...

हे जननी जनम कथी...
श्मशान सन घर आँङनमे
दीप नहि जरलै मैया।
डूबलै नैया मझधारक बीच
नहि पतवार खेबैया।।
आश अंङोरे जरलै ना...
हे जननी जनम कथी...
दया करू हे माए जग जननी
हम छी प्यासल भूखल।
दुखक दुपहरियामे अछि हमरो
देह टटाकऽ सूखल।।
समय अघोरे बितलै ना...
हे जननी जनम कथी...। ❑

झरकल मुँह झाँपिकऽ राखू

सम्मानक सम्मान क्षीण भेल
मैथिली मिथिला छोड़िये देब।
सम्मानो अपमानित होइए
हम माथा निज फोड़िये लेब।।

झरकल मुँह झाँपिकऽ राखू
हम कारीखसँ ढ़ौरिये देब।
माला मंच माइक धरि मिथिला!
हम रिवाजकेँ तोड़िये देब।।

पहीरि पाग घाघ जुनि बनियौ
हम भंडाकेँ फोड़िये देब।

सम्मानक सम्मान बचबियौ
हम नहि ओहिना छोड़िये देब।।

समयक शिलालेखपर लिखल
हाथ जोड़ै छी पढ़िये लेब।
हमर विरोधक स्वरकेँ बुझियौ
आब हलाहल घोड़िये देब।। ❑

फैशन

कनिञासँ बतियाइत रही हम
मन मुदा फगुनाएल रहय।
सासुरसँ सरहोइजक लिखल
चिट्ठी एकटा आएल रहय।।

चिट्ठीमे सम्वाद लिखल छल
मनक भेद विवाद लिखल छल।
दुभि बाटमे जन्मल पाहुन
शीघ्र आउ उपराग लिखल छल।।

कनिञा कहलनि हम छी सीता
नैहर लेल तरसै छी।
हम कहलियनि हम राम नहि
चुट्टी देखि डरै छी।।

अहाँ राम नहि तँए मुदा की
हम जिन्स पहिरै छी।

जाँघ नितम्वपर फाटल जे छल
फैशन वला तकै छी।।

फैशन देखि लोक नहि थुकलक
फैशन थिक बेकारे।
शिक्षाक किछु मोल रहल नहि
यौवन रहल नचारे।। ❑

हम मैथिल छी

फ्रेंच कटिंगकेँ दाढ़ीपर छी
चानन ठोप लगौने।
बापक बुड़िबक बेटा हम छी
आँगन घर घिनौने।।
हम मैथिल कहबै छी
हम ठिकेदार छी।
धोती पहिरक लुरि रहल नहि
हम छी मैथिल ज्ञानी।
तइयो हम मैथिल कहबै छी
काटि रहल छी चानी।
हम निर्लज बेसी छी।
चाउमीन चाटै छी बर्गर
मधुर मैथिली खट्टा।
संस्कार विचारकेँ बेचलौं
नित्य लिखै छी चिट्ठा।।
दागल साँढ़ बनक लेल।
नित्य हम मंच सजाबी।

अंङरेजिया टोपी पहिरै छी
पगड़ी मान घटाबी।
संस्कारके पितृमेध कए
मैथिल श्रेष्ठ कहाबी।।
हम गौरवे छी आन्हर।
बाँचल गौरवे टा अछि।
पेट पहाड़ भाव अछि मेवा
फुसियाँहीक सेवक।
सरिपहुँ बात कहै छी मैथिल
हमरा अछि किछु लेबक।।
केकरो कहबै टा नहि।
बात अपने तक राखब।
रिंकी पिंकी पुत्री सभ छथि
पहिरकऽ घुमथि जीन्स।
पुत्र हमर छथि पगड़ी बचौने
नाम जिनक छनि प्रिन्स।।
हम की बुड़िबक छी यौ
लाजक काज नहि कनिञो।
धोतीपर आइ जिन्स चढल अछि
सारीपर सलबार।
कपटी कामी क्रोधी-के भेल
मिथिलामे सरकार।।
बात हम सत्य कहै छी ।
चश्मा लगाकऽ देखू।
सभकेँ सभ छथि ठकैमे लागल
तइमे हमहूँ शामिल।
मनक बात कहै छी मैथिल

हमही टा छी काबिल।।
बात मानहि टा पड़त
अन्यथा दीप मिझा देब।।। ❑

बनलो बात बिगड़ि रहलैए

कहू हमर मिथिलावासी जन
किएक पलायन बढ़ि रहलैए।
राजनीति निर्लज्ज भेल अछि
मिथिला कहाँ सुधरि रहलैए
दागल साँढ सभ ढेकरि रहल अछि
विष केर गाछ मजरि रहलैए।
ईर्ष्या द्वेष आओर द्वन्द्व द्विगुण भेल
सगरो आगि पजरि रहलैए।।
मानव केर मन मैल बहुत भेल
दानव राज पसरि रहलैए।
मानव मनमे दानव पैसल
जातिवादमे जरि रहलैए।।
बुधिजीवी केर तपैप तर्कसँ
बहस विवादे बढ़ि रहलैए।
भेल विषाक्त माटि मिथिला केर
सगरो साँप ससरि रहलैए।।
अन्न विषाक्त भेल मिथिला केर
खाद्य अखाद्य उपजि रहलैए ।
आम गाछमे बीया बबूरक,
आमक बदला फरि रहलैए।।

कोयली किए दूतकारल जाइए
गामक गाम उजरि रहलैए।
स्तर उच्च करी चिन्तन केर
बनलो बात बिगड़ि रहलैए।। ❑

एकटा बात पूछै छी मैथिल

एकटा बात पूछै छी मैथिल
तन-मन हमर घवाह केना भेल?
चित चंचल मन व्याकुल हमरो
पोसल कुकुड़ कटाह केना भेल?
सत्य न्यायकेर संभाषक छल
तखन एतेक फुसियाँह केना भेल?
रक्षा लेल हम कुक्कुड़ पौसलौं
कहू कृतघ्न कटाह केना भेल?
हृष्ट पुष्ट देखि कऽ पोसलौं
कहू तँ भाइ! रोगाह केना भेल?
बिसरि गेल दायित्व अपन ओ
मालिकपर खिसियाह केना भेल?
सेवाक अवसर मङ्लक देलिऐ
कुक्कुड़ तखन विषाह केना भेल?
अहंशाहसँ शहंशाह भेल
हमरे ऊपर भुकाह केना भेल? ❑

मैथिल भैया करू विचार

मनक मर्म मिथिलावासीसँ
सुनबै छी सरकार।
नहि सपूत मिथिलामे रहलै
के करतै उद्धार।।
मैथिल भैया यौ...
आबो करियौ सक्षम उचित विचार।
नारीक शक्ति स्वरूपकेँ देखियौ
घर-घर अछि लाचार।
दुष्ट दहेजक कारण नारी
सहैए अत्याचार।।
मैथिल भैया यौ...
मनमे रखियौ आबो श्रेष्ठ विचार।
धोतीपर जिन्स चढ़ल अछि
साड़ीपर सलबार।
कपटी कामी-क्रोधीक भेल
मिथिलामे सरकार।।
मैथिल भैया यौ...
मनमे राखब उत्तम श्रेष्ठ विचार।
रसगुल्लापर माछक कुटिया
मैथिलक संसार।
बरियातीक लेल खस्सीक जान जाए
ई नहि शिष्टाचार।।
मैथिल भैया यौ...
आबो करियौ सक्षम उचित विचार।

घृतक नाम नहि; दही लुप्त भेल
पापड़ आओर अँचार।
ओलक चटनी हकन कनैए
तिलकोरक धिक्कार।।
मैथिल भैया यौ...
कुटिया बुट्टी भक्ष जनिक छनि
छथि ओ महिषासुर।
सिंहवाहिनी माता दुर्गा
औती आब जरूर।।
मैथिल भैया यौ...
बहिन जानकी जागू सीता
जग-जननीक अवतार।
नारी भ्रूणक हत्या होइए
मिथिलामे भरमार।।
मैथिल भैया यौ... ❑

सगरो पुष्पित अछि विष वेल

बहिन यै एकबेरि पुनि अबियौ
जनक नगरियामे।
मिथिला डुमल अन्हरियामे ना।।
बढ़लै दुष्ट दहेजक लोभी
सत्ता कपटी कामी-क्रोधी।
सभ केओ लिप्त भेल अछि
गणिका आओर छुतहरियामे।।
मिथिला डुमल...

सगरो चोर भ्रष्ट बटमार
होइ छै रौदी वाढ़ि सुखाड़।
सौंसे काँटे पसरल मिथिला नगर डगरियामे।।
मिथिला...

कृषकक पैर गड़ल अछि कील
खोलियौ कल करखाना मील।
होइ छै नित्य पलायन पेटक लेल शहरियामे।।
मिथिला...

भरल अछि क्रोध विरोध प्रतिशोध
दियौ दिव्य ज्ञानकेर बोध।
मिथिला फँसलै जाकऽ
उर्मि बीच लहरियामे।।
मिथिला...

नहि अछि मिथिलामे रोजगार
कुण्ठित कलुषित दूषित विचार।
सूतल कालनेमि सिंहासन उँच्च अटरियामे।।
मिथिला...

सगरो पुष्पित अछि विष वेल
रावण सिंहासन अछि भेल।
सत्ता शयन करैए स्वर्ण
सोम खड़खड़ियामे।।
मिथिला...। ❑

मिथलामे सरकार कहाँ छै?

मिथिलामे सरकार जरूरी
मिथलामे सरकार कहाँ छै?
बदलक छै सरकार जरूरी
मिथिलामे रोजगार कहाँ छै?

बदलब अपन विचार जरूरी
बाँचल आब बेवहार कहाँ छै?
सूतलि अछि सरकार निन्नमे
बदलक लेल तैयार कहाँ छै?

अगड़ा पिछड़ा कहिया तक ई?
पिछड़लकेँ रोजगार कहाँ छै?
सत्य बात कहिया स्वीकारत?
नैतिक धर्म विचार कहाँ छै?

संविधानमे शपथ कथी लेल?
आमजनक अधिकार कहाँ छै?
नेता नीति नियतमे अन्तर
बाँचल इमानदार कहाँ छै?

अगड़ा पिछड़ाकेँ लड़बैए
अपन स्वार्थ टा सिद्ध करैए।
पकड़लियै कमजोर नब्ज हम
समतल पुष्ट विचार कहाँ छै?

झंडा उघि रहल अछि बहुतो
मुदा लोक दमदार कहाँ छै?
कथनी करनी एक करत से
केकरो ई दरकार कहाँ छै? ❑

मिथिलाक गति

बाउ विकास कने जल्दी अबियौ
मिथिलामे अनहार बहुत छै।
बेरि-बेरि हम चिट्ठी लिखलौं
अबियौ आब दरकार बहुत छै।।
हकन कनैए मिथिला धरती
जनमानष लाचार बहुत छै।
बाउ विकास विलम्व जुनि करियौ
खाली हाथ बेकार बहुत छै।।
नहि वैद्य, नहि हस्पताल छै
बौआ हमर बिमार बहुत छै ।
हमर करेज ठण्ढ़मे ठिठुरल
वस्त्रहीन छी जाड़ बहुत छै।।
चास बास संसाधन रहितहुँ सभ
कनहापर भार बहुत छै।
पीपड़ पाखरि-के मोजर नहि
छाँवहीनटा तार बहुत छै।।
छै समाजमे बहुत विषमता
भ्रष्टाचार विकार बहुत छै।

किछुए-के चुनरी मलमल छै
बाँकी लोक उघार बहुत छै।।
राजनितिक दलदल-के कारण
सबहक मनमे रार बहुत छै।
अपना मनसँ सभ सिन्धु छै
देखलौं सूखल धार बहुत छै।।
शब्दक ज्ञान नहि रहलै केकरो
कहबै साहित्यकार बहुत छै।
महाअराजक विविध क्षेत्र
चलबक लेल सरकार बहुत छै।।
हमरो आश निराश करब जुनि
टूटल अंगक हाड़ बहुत छै।
मिथिलामे रोजगारक कारण
ओछ नीच बेवहार बहुत छै।।
दिन देखार आउ बाटमे
वंचक आओर बटमार बहुत छै।
आश लगौने बैसल छी हम
भूजक लेल कंषार बहुत छै।। ❑

मैथिलसँ अपील

सुनू शिष्ट मैथिल ज्ञानीजन
सभ मैथिलकेँ झाड़ि कहै छी।
ईर्ष्या, द्वेष आ द्वन्द्व द्विगुण भेल
हम धर्मक लेल मारि करै छी।।
अश्लीलता आओर अंगप्रदर्शनकेँ

मिथिलामे नारि कहै छी।
अछि विकास नहि; बहैए पछबा
सांस्कृतिक ह्रास बिहारि कहै छी।।
खण्ड विखंडित मानवता अछि
हम लकीर-के पारि कहै छी।
परसि रहल अश्लील ज्ञान जे
ओहि विकास के गारि पढै छी।।
संस्कारहीन शिक्षा दामी
हम धोती-के फारि कहै छी।
अगड़ा पिछड़ा छोड़ि दियौ सभ
मैथिलकेँ ललकारि कहै छी।। ❑

दहेजक लोभी

बाप छै दहेज लोभी
बेटा औनाइत छै।
गाम-गाम विवाह लेल
बर ढहनाइत छै।।
लेतै दहेज ढाकी
छीटाक पेन कटैत छै ।
आँखिमे नहि निन्द
मुदा सपना देखैत छै।। ❑

जीवन भेल पहाड़

सुन्दर सजलौं कए शृङार
गांवमे हँसिकऽ देलउ हकार।
रौली माथ सजाओल
कान युगलमे साज गे।।
यौवन अछि उजियार गे ना...।
कुन्तल कामक लेल ललकार
मनमे कोमल कमल विचार।
पवन आइ परसि रहल छै
प्रेम पुष्प आओर हार गे।।
नारी हम उपहार गे ना...।
क्षण क्षण आशा-के संचार
पहुँ यौ जल्दी लाउ कहार।
नहिरा नहि भाबैए
जीवन भेल पहाड़ गे।।
प्रेमक कुन्ज विहार गे ना...।
हमर अछि सरल सौम्य बेवहार
तहिना अंगक शिष्टाचार।
मटकी मारि रहल छल
निर्ममतासँ मार गे।
मनुञा पंच मकार गे ना...।
कामिनी कोमल सन सुकुमारि
मनमे फाटल जेना दरारि।
पहुँ आइ आबि रहल छथि
सभ रोगक उपचार गे।।

हर्षित नगर जबार गे ना।
नित्य हम भोरे उठब नहाएब
गीत सभ पंचम सुरमे गाएब।
गे बहिना प्रीतम पावन परमेश्वर अवतार गे।।
जीवन के छथि सार गे ना...। ❑

सासुरक हाल

की कहियौ बहिना हम
ससुराक हाल गे।
साउस हमर सूर्पनखा
ससुर हमर काल गे।।
गोतनी छै गोर मुदा
गौरवे छै आन्हर।
ढेकरैए साँढ़ सन
नह जेना नाहर।।
ननदी नटिनिया बड़
बजबै छै गाल गे।
साउस हमर...
देवर छै गोबर सन
कोयला सन काया।
भैंसुर छै भैंसा सन निर्लज बेहाया।।
कंठी पहिरी करै कौआ हलाल गे।
साउस हमर...
बाबू दहेज देलनि किनला अनाड़ी।
बुझए नहि बात बरद अवगुण छै भारी।।

कोठी छै ढन ढन होइ भूख हड़ताल गे।
साउस हमर...
घरमे नहि चिक्कस
नहि कोठीमे चाउर छै।
बारीमे ओल बहुत
उपजल खम्हाउर छै।।
नोरेमे तरूआ तरै छी
लाल लाल गे।
साउस हमर...
सरपंचो सासुर के
मौगा छै मुखिया।
पेटु प्रमुख आओर
डीलर छै दुखिया।।
मेम्बर-के पेट जेना
टंकी विशाल गे।
साउस हमर...
बर हमर बुड़िबक सन
फड़ महकारी।
भेलै विवाह देख
कोठा अटारी।।
बिड़रल बेवहार हुनक
तेकरे मलाल गे।
साउस हमर...। ❑

सभटा दुख दहेजक कारण

गे बहिना वर हमर
बड़ बुड़िबक आओर बकलेल छै
सासुर सेन्टर जेल छै ना
देवर चारू काच कुमार
ससुरक साँप सनक फुफकार।
ननदी नाक कटाकऽ
नङटिनीया सन भेल छै।।
सासुर सेन्टर जेल छै ना...
बर्तन मजिते देह खियाएल
साउसक बातो बेस पिजाएल।
धनि ओ जुन्ना सन के ऐठलि
आओर विष वेल छै।।
सासुर सेन्टर जेल...
घरमे डर लगैए भारी
लागल नहि छै फटक केबारी।
सभटा दुष्ट दहेजक कारण
गड़बर भेल छै।।
सासुर सेन्टर जेल छै ना...
ससुरक जेठ भाइ मुँहझौसा
फूलल बेङ सनक अछि ढौसा।
अगुआ आगि लगाकऽ
सारामे सूति गेल छै।।
सासुर सेन्टर जेल...।

मरए वरक बाप जे लोभी
ओ छथि देवक वेद विरोधी।
स्रष्टा सृष्टी केलनि गड़बर आओर बेमेल छै।।
सासुर सेन्टर जेल छै ना...। ❑

अनाड़ी बर

गे बहिना बर हमर बड़ बुड़िबक
आओर अनाड़ी छै,
मूर्ख शिरोमणि कारी छै ना...।
दुष्ट दहेजक हम छी मारल
यौवन जिबिते गेलै जारल।
बुड़िबक बात नहि बुझए
बापक आज्ञाकारी छै।।
मूर्खशिरोमणि...
एक तँ गोबर-के छै चोत
हम छी लाजे लाहालोट।
लाजक बात की कहियौ
नहि पुरूषे नहि नारी छै।।
मूर्खशिरोमणि...
यौवन छिन्न भेल निस्तेज
फाटए कोमल कोढ करेज।
बुझए प्रणय निवेदन के नहि
पैघ बीमारी छै।।
मूर्खशिरोमणि...
कहितो लाज लगैए भारी
अकिल-के खोलए नहि अलमारी।

बरही बिना ओजारक
वुद्धिक बन्द केबारी छै।।
मूर्खशिरोमणि...
करबै केकरापर हम आश
बाहर पवन बहै उनचास।
केकरा कहबै मनक बतिया
बड़ लाचारी छै।।
मूर्खशिरोमणि...
जहिना झरकल सन छै देह
हमरो जरलै सख सिनेह।
विद्या पढने एक्कहि मात्र
मुदा भैंसबारी छै।।
मूर्खशिरोमणि...
शिक्षा पहलामे अछि फेल
हमरा चिन्हलक नहि बकलेल।
नहिरा नीक लगैए
रहै जेना कुमारी छै।।
मूर्खशिरोमणि...
पौरुष रखने नहि जरलाहा
बथुआ साग सनक नरमाहा।
यौवन धधकि रहल अछि
हमरा संग लाचारी छै।
मूर्खशिरोमणि...। ❑

भव्य दिव्य अछि भाल

मिथिला जेकर अपन छै
ओकरेमे हम साटब।
रक्ष भाव जे रखने मनमे
पैर ओकर हम काटब।।
ज्ञानक गरिमा हम जनै छी
तँए आइ मैथिल कहबै छी।
हमरे मिथिला हमरे धरती
हम उपज के फाँटब
मिथिला...

बण्ठा भाइसँ लेब विचार हम
आओर लोरीकसँ लाठी लेब।
दीनाक देल इजोतक दर्शन
हम समाजमे बाँटब।।
रक्ष भाव...

ज्ञान सुधामयी निर्मल मिथिला
भव्य दिव्य अछि भाल।
जाति धर्मक भेदकेँ भेदब
आओर खाइध के पाटब।।
मिथिला...

मिथिलाकेँ जे बाँटि रहल अछि
देखियौ हमरे डाँटि रहल अछि।
हेतै विकास मिथिला धरतीकेर
बैसि विचार के बाँटब।

रक्ष भाव...
मिथिलाक हम क्रान्तिदूत छी
घेरने रोग बिमारी,
एहि अनहारमे चाही हमरा
वैचारिक चिनगारी।
गली गली अनहार घरमे
चन्द्र सूर्यकेँ साटब
मिथिला...

जे हमरा बुड़िबक बुझैए
बुझियौ अपने पैर कटैए।
आब चलाकी मुदा नहि चलतै
अंकुशसँ हम आँकब।।
मिथिला...

सुख शान्ति समृद्धि मनोहर
हम समाजमे आनब।
बहुत ठकेलौं फेर ठकाएब नहि
आब आगि नहि पाकब।
मिथिला...

हमरा मिथिला राज नहि चाही
भेटत तँ विधिवत् हम लेब।
हम्मर हिस्सा हमरा चाही
नहि सुनब हम डाँटब।।
मिथिला...

वैचारिक कोमल किसलयसँ
हम वैचारिक आगि जराएब।
बहिन चनैनिकेर खोंइछि भरब हम

सलहेशक पौरुष हम पाएब।।
अवर प्रवर के मैथिल बुझियौ
केकरो नहि हम छाँटब।
मिथिला...। ❑

गत्तर गत्तर लगलौ दाग

तूँ निर्लज्जा असली मैथिल!
कहिया-के तूँ मैथिल? बाज ।
पेटे तोहर पहाड़ लगै छौ
नहि गत्तरमे कनिञो लाज।।
नैतिकता सिद्धान्त ताकपर
छिना जेतौ नकली खतियान।
तूँ समाज आओर राष्ट्र विरोधी
अवगुण केर तूँ खान महान।।
माला मंच माइकमे मिथिला
माथपर चाही ललका पाग।
आब सुधरि जो निर्लज्जा तूँ
गत्तर गत्तर लगलौ दाग।।
तूँ ही एकसर असली मैथिल
बाँकी की वनगदहा!
तोरा लेल के बुड़िबक रहलै?
के उघतौ हरलदहा? ❑

जाग-जाग सुच्चा मैथिल जाग

गहुमन बनल महान मैथिल अछि
सुच्चा मैथिल सूतल।
बेरि बेरि हम पूछि चुकलियै
केकरासँ अछि रूसल।।

कहिया ई जागत घरघुसना
लाज कहाँ छै गत्तरमे।
एखनो नहि बुझै छै अन्तर
गदहा घोड़ा खच्चरमे।।

बास डीह बन्हकी रखने अछि
वंशज जेतै निखत्तरमे।
वंचक-के बान्धव बुझैए
बाजत की?प्रतिउत्तरमे।।

लात खाइतमे उमर बितल छौ
गारि सुनैतमे पकलौ केश।
तन्द्रा-के तूँ त्याग पतितहा
देहमे नहि छौ लाजक लेश।।

मुँहमे तोरा खुआ देतौ के?
सभ छै अपने भूखल।
नहि खेबही अप्पन हिस्सा तँ
भेटतौ रूक्खल सूक्खल।।

गहुमनकेँ थुरब आओर थकुचब
अछि उपचार जरूरी।
सुच्चा मैथिल निर्लज्जा तूँ
फोड़ि ले हाथक चूड़ी।। ❑

बेटी बापक सन्ताप

सुनू शिष्टजन कन्यादानक
कथा कारुणिक सुनबै छी।
बेटीक बाप बनैए शापित
निज अनुभव हम बतबै छी।।

दुष्ट दहेज उपनिवेशमे
हमहूँ छी बेटीकेर बाप।
बेटी जनम लेलक तहियेसँ
सहि रहल छी सभ सन्ताप।।

सक्षम बर खोजैमे फाटल
जे जूता छल जीर्ण खियाएल।
कुर्तामे चिप्पीपर चिप्पी
बेरि -बेरि छल सेहो सियाएल।।

बाट चलैमे ठेस लगै छल
मन करै छल कानी।
कोन पाप कहिया हम केलौं

से किछुओ नहि जानी।।

नोर-नयनमे कनैत आत्मा
सहै छलौं नगरक उपहास।
श्रेष्ट -शिष्ट सभ कोनटा धेने
नगरमे दुष्टक बेसी बास।।

बेटी हमर हम सन्तापित
कन्यादानक चिन्ता खास।
घटक मुँहपर थुकि दैत छल
नहि छल खेती किछुओ चास।।

नगरक लोक निरर्थक काबिल
माङै छला दलाली।
चित चिन्तित मन व्यथा वेदना
जेब रहै छल खाली।।

वरक बाप अर्थक भूखल जे
मारि लातसँ केलनि कात।
बहुतों घटक देहपर थुकलनि
तखनोधरि बनल नहि बात।।

हमर नोरमे तरलनि तरूआ
गृहिणी नोरसँ छौंकलनि दालि।
बेटी देखि नोर झहरै छल
कतेक दिन कहू राखब टालि।। ❑

आत्मकथा- 01

अर्थक हीन मनोरथ सभटा
छल सपना सपने रहि गेल।
देखब कहिया दिन सुदिन हम
दग्ध हृदय जरिते रहि गेल।।
छल द्वेष दंभसँ दूषित समाज
उपहासे मात्र करैए।
मन मारि अपमान सहै छी
झर्झर नोर बहैए।।
हम समाजक व्यंगात्मक
सम्बोधन सभ स्वीकार करै छी।
केओ बुझैए पिलिया कुकुड़
तेकरो अंगीकार करै छी।।
छी समाजमे गौण-मौन हम
गुजर करै छी खखरीसँ।
गाँधी वस्त्र बुड़िबक बुझैए
डर लगैए बकरीसँ।।
पौरुष-पैर पाँखि अछि काटल
हाथ हथौड़ीसँ थुरल।
दगाबाज सभ दर्दे दइए
स्वाभिमान सेहो चुरल।।
वस्त्रहीन छी देह उघार अछि
सच पूछी दरकारो नहि अछि।
मंङलासँ के देत दयालु
हमरा लेल सरकारो नहि अछि।।

अपन नोर अपने पोछै छी
जे पोछत से माङत आँखि।
बन्द करत पिंजड़ामे पहिले
उड़लापर काटत ओ पाँखि।।
एहनो लोक भेटला समाजमे
महाप्रतिष्ठित आओर महान।
हमर आँखि हमरासँ छिनला
बादमे देलनि चश्मा दान।।
शब्दक हम छी कृषक अनाड़ी
नहि उपजैए मरुवा धान।
छी विचारमे बारूद भरने
सुनक लेल नहि सक्षम कान।।
नहि पौरुष नहि पगड़ी माथमे
छी समाजमे स्तरहीन।
हँसी हमर अछि बन्हकी लागल
लए छी साँस बसातो कीन।।
भूखल नहि हम धन सम्मानक
भूखल छी हम स्नेहक।
पलटि क पहिरै छी हम गुदरी
फाटल अपने देहक।।
जीवन भरि पतझड़मे रहलौं
नहि वसन्तकेर दर्शन भेल।
धरती आ आकाश सुखल अछि
मधुमासो सुखले रहि गेल।।
जेबीमे अछि स्वर्ण निष्क नहि
झोरीमे अपमान भरल अछि।
ठाढ़ भेल हम कनगीपर छी

पैरमे कंकड़ काँट गरल अछि।।
होश-हबास नहि छी हताश हम
लोक जजातक खअर बुझैए।
स्वार्थी सम्बन्धी सभ रूसल
किछु माङत ताँइ बुझैए।।
साहस संग संकल्प जुटाकऽ
कोहुना जीबि रहल छी।
भवन-भूमि नहि देलनि विधाता
फाटल सीबि रहल छी।।
सावन प्यासल भादो प्यासल
तरसै चान इजोरिया लेल।
कृष्ण-कर्मकेँ व्यवसायीगण
कृष्णपक्षसँ रखनेमेल।।
चुटकी भरि इजोतक कारण
हमर घर अन्हार रहैए।
भेटल अछि उपहार गरीबी
जीवन हमर पहाड़ लगैए।।
अपन लहाश अपने कनहापर
कोहुना उघि रहल छी।
श्मशान आब कतेक दुर छै
से नहि बूझि रहल छी।।
के जराओत एहि लाश खास-के
एहि बातक अछि चिन्ता।
उगल चान नहि; रहल अन्हरिया
जेकरे छल सिहन्ता।।
हमर देह ई जरतै जहिया
के कनतै केकरा छै नोर।

मरिते नाम निपत्ता हेतै
नहि देखबै हम सुन्दर भोर।।
बेटी हमर रूप-के रानी
बापे हुनक रुपैया हीन।
घटक मुँहपर थुकि दैत छल
देत कथी ई दुखिया दीन।।
देह आत्मा बेचिकऽ केलौं
जे छल एकटा कन्यादान।
दशो दिशा अन्हार लगैए
कहिया होइत नवल विहान।।
बेटीके छनि उजरल नैहर
सासुर छनि लचरल लाचार।
भाय एको नहि बहिनमे असगर
ब्रम्हा लिखलनि ब्रम्ह विचार।।
हम समाजक नजरिमे दोषी
दोषी हमर गरीबी।
हम अभिशापित हाथ मलै छी
के छथि हमर करीबी।।
बुड़िबक लोक बुड़िबक बुझैए
कबिलाहा फेकैए थूक।
साधनहीन गरीब बुझिकऽ
सम्बन्धी लए जड़बए ऊक।।
रंग बीच बेरंग रहै छी
फगुआ आओर दिवाली।
दुनियाँ जखन भुलाएल रहैए
विषवाला मधु प्यालीमे।।
महा भोज होइए समाजमे

हम रहै छी भूखले।
रोटीपर नहि नोन जुड़ैए
हाथ रहैए सुखले।।
छी समाज केर छोटकी भौजी
छेड़-छाड़ अपमान सहक लेल।
हमहींट टा उपयुक्त मात्र छी,
नोनगर करुगर बात सुनक लेल।।
जीवन दीप मिझाएल हमर अछि
कोयलीक बोली करुगर भेल।
स्नेहक बाती खाक भेल अछि
आब दीपमे नहि तेल।।
मन करैए त्यागि देबक लेल
रिश्ता एहि संसारसँ।
महा सेजपर महानिन्दमे
शयन करी अधिकारसँ।। ❑

हम की करब

भीषण हमर प्रतिज्ञा मैथिल
शब्दके नहि नोकसान करब हम।
जिनक चरित्र चान सन चमकनि
तिनके टा गुणगान करब हम।।

कलम हमर हाथो हमरे अछि
चोरक किएक बखान करब हम।
जेकर चालि कारी कुक्कुड़सन
तेकरो किएक मखान कहब हम।।

माला मंच मान-के बुझियौ
केकरो किएक सम्मान करब हम।
कला दक्षता जेकरामे नहि
तेकरा किएक महान कहब हम।।

जे ढ़ेल फोरबा माटिक ढेपा
तेकरा केना चेखान कहब हम।
जे रसज्ञ रस-के ज्ञानी छथि
हुनके टा रसखान कहब हम।।

मैथिल शिष्ट विशिष्टसँ विनती
सुनियौ कने हरान करान हम।
छलमे छेद केलक नहि कहियो
ओकरा केना रुखान कहब हम।।

घास पात उपजलै मिथिला
ओकरा काटि ओरान करब हम।
कादो करब घास-के गारब
अगिला खेती धान करब हम।।

मरुआ जकाँ मिरेला मैथिल
तखनो किएक अकान बनब हम।
सभ दिन बुड़िबक बारल हमहीं
पात्र देखि मतदान करब हम।। ❑

हम धनि छी प्यासलि

नारी हम कोमल-कमल
मनमे बहुत दरारि।
मारक मारि सहब दुष्कर अछि
कामक उठल बिहारि।
तोयद् तोय विहिन पहुँ छैथ
तोयज्-के नहि आशा।
नोरे बोरल जीवन-यौवन
पूरल नहि अभिलाषा।।

बहिना वाम विधाता ना ।
पावस हमरो नयन समाएल
नेह मुदा अछि प्यासलि।
पुरुष पहुँ छथि बिसरल हमरो
हम धनि छी हरिवासल।।
बहिना वाम विधाता ना
रहल वसन्तो रुसले हमरो
पतझाड़क अछि आशा।
पूजल देव पितरकेँ बहुतो
सभ केओ देलनि दिलाशा।।
बहिना वाम विधाता ना।।

यौवनसँ हम परिपूरीत छी
पहुँ छथि काठ कठोरे।
निष्ठुर परूष पहूँ बनि बैसल
रखने धनि-के दूरे।।

बहिना वाम...
बहिना वाम विधाता ना।।

सावन प्यासल भादो प्यासल
हमहूँ धनि छी प्यासलि।
आब पहुँ जँ नहि घर औता
यौवन हमरो भासल।।
बहिना...।

कतेक सहब हम पूर्वा पछबा
पवन बहए उनचासे।
सुखल नेहक गागर हमरो
यौवन मधुघट नासे।।
बहिना वाम विधाता ना...।

नारीक जीवन नरक हमर अछि
जरल हमर मधुमासे।
पहुँ प्रेमक बन्धनमे बान्हल
हमर पहुँ छथि पाशे।।
बहिना वाम विधाता ना...

सख सिहन्ता पूर भेल नहि
गेला विधाता गामे।
हमर विरंची महाप्रपंची
भए बैसल छथि वामे।।
बहिना वाम...। ❑

उमरल नेहक धार

प्रणय निवेदन सुनियौ यौ
प्रेम जगतमे सार छै।
सावन एलै फुटल छै मधुघट
रस-के बहल टघार छै।।

सोलह सिङार बतीस अभरनपर
मारक भारी भार छै।
वृन्दावनमे व्याकुल अलिकूल
रसपानक लेल ठाड़ छै।।
सावन...।

मन्मथ मदन मानिनी कामुक
प्यासल बहै वयार छै।
सावन सनक नयन बरसैए
उमरल नेहक धार छै।।
सावन...।

काननमे कोयली कानैए
कानब नहि उपचार छै।
प्रेमक अर्पण करै छी पहुँ यौ
प्रेम पैघ उपहार छै।। ❑

मिथिला राज केना लेब

मिथिला राज लेबै? तँ आउ
लोरीक-के किछु फूल चढ़ाउ।
बदलि दियौ निज दूषित विचार के
बिना आँच नहि सिझत दालि।
पुरिया बान्हि जेबीमे राखल
आउ काल्हि हम देब निकालि।।
शलहेसक गहबरमे चलियौ
सलहेसोकेँ फूल चढ़ाउ।
मिथिला...

किछुए लोक अराजक छथि जे,
मिथिलामे मैथिल कहबै छथि।
हमहूँ मूल मैथिल छी एकटा
हमरे टारिकऽ कात करै छथि।
नैतिकता मर्यादा रखियौ
हमरो उचित सम्मान दियाउ
मिथिला...
एक सूत्रमे बानहूँ मिथिला
मिथिला-के परिवार बनाउ।
राखू नैतिकता निज मनमे
अनकर अंश महज जुनि खाउ।।
सकल विभूति-के एक बनबियौ
सकल सकल-के मान दियाउ।
मिथिला राज...
माङनसँ मङियौ किछु शिक्षा
होउ विनित देता ओ दीक्षा।
महज महान ओ लेता परीक्षा

चरणमे हूनका शीश नमाउ।।
बंठा वीर सन उदित सूर्य के
दीना भद्री-के गोहराउ।
मिथिला राज...। ❑

हम मैथिलक झरूआ छी

मैथिल छला हमर पूर्वज सभ
हम मैथिलक झरुआ छी।
टाका पैसाक अभावमे
कनिञाक मुँहजरुआ छी।।

धोती पहिरक लुरि रहल नहि
हम छी मैथिल ज्ञानी।
बलजोड़ी मैथिल कहबै छी
काटि रहल छी चानी।।
बाजै छी अंग्रेजी, हिन्दी
अंग्रेजी के भरूआ छी।
टाका पैसा...
कनिञा...

हम मैथिली शुद्ध लिखब से
मुदा आब ओ ज्ञान रहल नहि।
सुनब गीत उदासी सोहर
केकरो सक्षम कान रहल नहि ।।
चाटि रहल छी पिज्जा बर्गर

तीत पोरली के तरूआ छी।
मैथिल...
टाका...

मिथिलामे तिलकोरक तरूआ
अपने घर उपहासित अछि।
अंग्रेजी जापानी व्यंजन
भोजनमे परिभाषित अछि।।

ओलक चटनी हकन कनैए
हम मैथिल असगरूआ छी।
टाका...
कनिञा...।। ❑

सहब आब नहि अत्याचार

पटना खसत पैरपर हमरे
दिल्ली माङत दया केर भीख।
भीक्षा पात्रमे थुकि देबै हम
जँ मैथिल सीखता किछु सीख।।
पटना पैरकेँ पहिले तोड़ब
दिल्लीकेँ तोडब सभ दाँत।
प्रतिनीधि केर पेट बढ़ल अछि,
काटिकऽ छोट करब हम आँत।।
हम धरब नरसिंह रूप केर
सरकारक तोड़ब हम घार।

भूखले नहि गुणगान करब हम
चाही किछु रोजी रोजगार।।
सरकारो पोसने अछि चारण
हमरो अछि परिवारक भार।
बहुत सुनलियै अगड़ा पिछड़ा
सहब आब नहि अत्याचार।। ❑

स्वामी नहि हम सेवक चुनव

जन-जन केर सहयोग जरूरी
नवका किछु इतिहास गढ़ब हम।
सहब उपेक्षा कतेक दिन धरि?
नव धरती आकाश गढ़ब हम।।

सकल हाथ हो व्यस्त काजमे
रोजगारक किछु आश गढ़ब हम।
मरुवा जकाँ मिरेला मैथिल
अपनो लेल किछु खास गढ़ब हम।।

वीर विहीन नहि मिथिला धरती,
दुष्टक लेल गरोँस गढ़ब हम।
मोक्ष दायिनी मातृभूमि अछि
केकरो नहि उपहास सहब हम।।
मिथिलामे संसाधन कम नहि
उपनिवेश नहि वास करब हम।
कुम्भकरण केर निद्रा त्यागब
तखने अपन विकास करब हम।।

अधिनायकवादी सत्ताक
जखनहि बदलब नाश करब हम।
शुक्लपक्ष मिथिलामे रहतै
सभ दिन किएक उपास रहब हम।।

वीणाकेर स्वर पंचम सुनलौं
आब मुदा चन्द्रहास गढ़ब हम।
कलमवीर आओर कर्मवीर लेल
आयुध बहुतेरास गढ़ब हम।।

स्वामी नहि; हम सेवक चुनव
मिथिलाक लेल दास गढ़ब हम।
एक सूत्र बान्हब मैथिलकेँ
प्रेमक डोरी पाश गढ़ब हम।। ❑

गीत विकासक लगनी

सुच्चा मैथिल मिथिलाकेँ जगाउ यौ
पूर्वा पछवा पवनसँ मिथिला के बचाव यौ।।
दुष्टक नजरि नहि लागए मैथिल
मिथिला माटि मनोहरकेँ।
धरती गगनकेँ पावन राखी
पुष्पित करु सरोवरकेँ।।
गीत विकासक लगनी सोहर गाउ यौ।
सुच्चा...
कृषियज्ञ केर हवनकुण्डमे

मंत्र हो गहुम गीताकेँ।
धानवाण पढि रक्षा करियौ
मिथिला परम पुनीताकेँ।।
माटि हमर बेसी सभसँ उपजाऊ यौ।
लोरीककेँ हम नमन करै छी
सलहेसक मर्यादाकेँ
चण्डी चननिकेँ शत् शत् विनती
विनती जीवन सादाकेँ।
घर घर ज्ञानक वैभव दीप जराउ यौ।
सुच्चा मैथिल मिथिला...। ❑

नीनमे सुतल सरकार

आउ विमर्श करी मैथिलजन
जनमानस लाचार किएक छै?
संसद् आओर सरकार सेहो छै
बढ़लै अत्याचार किएक छै?

जागल भ्रष्टाचार मात्र छै
निन सूतलि सरकार किएक छै?
अपने पेट पहाड़ जेकर छै
कहबै पालनहार किएक छै?

बाट घाटमे वंचक बैसल
गोपुरमे प्रतिहार किएक छै?
बुधिविहीन भोथ शस्त्र लए
कहबै चौकीदार किएक छै?

लोक-लुभावन भाषण मिठगर
निपुण वैद्य बिमार किएक छै?
नगर नागरिक नोरमे बहलै
नैया खेवनहार किएक छै?

हमरो केओ काबिल जुनि बूझब,
कुण्ठित हमर विचार किएक छै?
मौलिक सभ अधिकार हमर छै
हमरे घर अनहार किएक छै?

सविधान संसाधन हमरो,
बैशखेबामे जाड़ किएक छै?
डेग-डेगपर करियौ धधरा
हमरेपर सभ भार किएक छै?

हथ उठाइ भोजन नहि करबै
घरमे राखल थार किएक छै?
आँखि कान ज्ञान अछि हमरो
फुसियाही परतार किएक छै? ❑

मैथिलक दशा

मैथिल छी माछी भिनकैए
मैथिल हमर घवाह बहुत छथि।
सत्य बात हमहूँ नहि बाजब
मैथिलजन खिसियाह बहुत छथि।।

बेरि बेरि विवाहक बादो
मैथिल मुदा तवाह बहुत छथि।
स्वयंवरमे भसियाइत बहुत छथि
कारण ओ भसियाह बहुत छथि।।

दूध मलाइ हमहीं सभ खाएब
किछु मैथिल जिबलाह बहुत छथि।
बात बजइ छथि गोरका बड़का
रखने सोच सियाह बहुत छथि।।

भोट करब अपने स्वजाति के
रखने मन मछाह बहुत बहुत छथि।
ढौआ देखि पिछड़ता बेसी
कारण ओ छिछलाह छथि।।

कथी लेल ई मैथिली मिथिला?
मैथिलो मरखाह बहुत छथि।
साँपक उपनिवेश मिथिलामे
मैथिल हमर विषाह बहुत छथि।।

पोसा कुकुड़ ठकै छनि हुनका
पोसने कुकुड़ कटाह बहुत छथि।
पाँच बरिसपर दर्शन दै छनि
कारण ओ खरखाह बहुत छथि।।

बेरि-बेरि ओ ठका रहल छथि
कहबै ओ पुरूषाह बहुत छथि।
बुझब केना हुनका छथि ज्ञानी
एखनो धरि ईर्ष्याह बहुत छथि।। ❑

देह मुदा दू दोबर छै

हम केकरोसँ बात करब नहि
हमरा केओ जुनि टोकब।
भैंसकेँ हम कुड़हड़िसँ नाथब
खबरदार! नहि रोकब।।
हमर भैंस अछि राजनीतिमे
देहमे लागल गोबर छै।
दृष्टि ओकर दूर्वल छै बैसी
देह मुदा दू दोबर छै।।
नाइथि लैत छी तखन हेलेबै
तेकरा बादे खीचबै नाथ।
करुगर छी मिरचाइ के पिसने,
लगा देबै आँखि आओर माथ।।
हालहिंमे बच्चा जनलक अछि

गाभिन अछि पुनि सेहो।
हरियर घास खाइत अछि खूबे
बच्चापर छै नेहो।। ❑

बेरि-बेरि हम नमन करै छी

श्रद्घा-सुमन समर्पित सादर
सभ मैथिल सन्तानकेँ।
नमन नम्र वन्दन अभिनन्दन
मिथिला भूमि महान-के।।

लोड़ीककेँ हम नमन करै छी
कविवर श्रेष्ठ सुजानकेँ।
शतानन्द के शत् -शत् विनती
अवर प्रवर विद्वान के।।

पाहुनकेँ हम नमन करै छी
ब्रम्ह रूपमे रामकेँ।
बेरि-बेरि हम नमन करै छी
कवि कोकिलक गाम-के।।

चननि आओर सलहेशक विनती
महिसोथा अभिरामकेँ।
मिथिला वंश वेलिकेँ विनती
दिव्य देह निष्कामकेँ।। 4

बंठा वीर सन उदित सूर्य के
मिथिला विमल विहानकेँ।

महिष्मतीकेँ नमन करै छी
आओर अयाचीक ज्ञान के।।

दीना धन्य प्रणम्य देव छथि
नमन पुनौरा धामकेँ।
हम विदेहकेँ नमन करै
कोमल पावन नामकेँ। ❑

अपने करू अपन उद्धार

आब संघर्ष अवश्यम्भावी
जल्दी बहतै रक्तक धार।
तखने मूल मैथिल जन पौता
जीवनमे रोजी रोजगार।।

चाइनक ऊपर पानि बहैए
सावधान सूतलि सरकार।
आब मान मर्दन नहि सहबै
चाही सभ वैधिक अधिकार।।

के भाषाकेँ बन्हकी रखने
ओकरो आब करब प्रतिकार।
चन्द्रहास चमकतै जखने
तखने थम्हतै अत्याचार।।

सत्ता स्वयंवरमे सत्ताकेँ
फोरब लहठी छीनब सिङार।

सत्ता निज दायित्व नहि बूझत
नैया डुबा देबै मझधार।।

हमहूँ बना लेने छी मनमे
साधल उत्तम श्रेष्ठ विचार।
सिंहासन केर पलटि देबै हम
आब हाथमे लेब कुठार।।

सभ मैथिलसँ हमर निवेदन
अपने करु अपन उद्धार।
समतामूलक मिथिलाक लेल
अपनहि अपन बनू आधार।। ❑

हम जागल छी

हमरा केओ सूतल जुनि बूझब
जागल छी आराम करै छी।
मंथन मनन धर्मकेर चिन्तन
हम एखन व्यायाम करै छी।।
हम समाज संग सरकारक
सभ कला दक्षता देखि रहल छी।
के सेवक? के कुर्सी लोभी?
सूतले चारूधाम करै छी।।
हमरा केओ...
एखनधरि सभ ठकबे केलक
जीतने छल विश्वास जे सेहो।
बेरि बेरि कुर्सी बदलैए

प्रतिनीधि सरकारक सेहो।।
बेसी दिन केऔ ठकत केना कऽ
ठोकले ठामेठाम कहै छी।।
हमरा केओ...।।
घृणा द्वेष केर बात बाजिकऽ
परसैए उन्मादे बेसी।
नरपिशाच तूँ कान खोलि सुन
नहि रहतौ बेसी दिन ठेसी।।
के चलाक, के बुड़िबक बेसी?
बात सकल अभिराम करै छी।।
हमरा केऔ...।
अगड़ा पिछड़ा बहुत सुनलियै
कहियो कहाँ स्वाद चिखलियै।
जेकरा मोक्षक द्वार बुझलियै
तेकरा खाली भाँड़ देखलियै।।
मंच आओर पुष्पमालपर
हमहूँ आब विराम करै छी।।
हमरा केओ...।
सूतल छी हम आँखि खोलिकऽ
कुम्भकरण सन निन हमर नहि।
देह हमर दूर्वल पहिलहिसँ
पेट छोट अछि पीन हमर नहि।।
केकर खुसामद करब कतेक दिन?
केकरो हम नहि नाम करै छी।।
हमरा केओ सूतल...।। ❑

मिथिलाक मैथिली

मैथिलीक उपयोगिता मैथिलीक महत्व
मिथिला हमरे प्राण मैथिली
खेतीह कोजगराक पान मैथिली।
विविध गीत केर तान मैथिली
भूषित आओर महान मैथिली।।

मैथिल केर अछि प्राण मैथिली
मिथिला-के पहचान मैथिली।
सभ गुण-के अछि खान मैथिली
छथि पुनम केर चान मैथिली।।

तीनहुँ तापक त्राण मैथिली
मैथिल केर अछि मान मैथिली।
समृद्ध आओर विद्वान मैथिली
भाषा अछि गुणवान मैथिली।।

केलनि अछि ओरियान मैथिली
करती आब कल्याण मैथिली।
खेती मषक मखान्न मैथिली।
हमर बढ़ौती मान मैथिली।।

शिव शंभूक वरदान मैथिली
मैथिल लेल की आन मैथिली?
ज्ञानी श्रेष्ठ सुजान मैथिली।
लागि रहलि झुझुआन मैथिली

शिव शंमूल
वरदान मैथिली,
मैथिल लेल की
आन मैथिली?
ज्ञानी श्रेष्ठ सुजान मैथिली,
नहि रहती झुझुआन मैथिली।।

रोपब आओर उपजाएब मैथिली
मुदा काटि नहि खाएब मैथिली।
पढ़ब नित्य हम गाएब मैथिली
सपनोमे बतियाएब मैथिली।। ❑

अपनो कने विचारब

उझझट् बात कहै छी मैथिल
अपनो कने विचारब।
सम्मानक लेल अहींटा सक्षम
से नहि हम स्वीकारब।।
अपन मुँह देखू दर्पणमे
अही लेल की मिथिला राज।
आब प्रपंच केर छोड़ू मैथिल
बगरो आब बनल अछि बाज।।
उर्ध्व कूल आओर मूल अहिंके
थेथरैसँ चलतै नहि काज।
हमहूँ बजा सकै छी सभटा
जे कोनो बजबक छै साज।।

बरदसँ बेसी बुधिमान जे
तेकरे माथ मुकुट छै ताज।
मोह-मुक्त जे भेल नहि कहियो
तेकरे पूजै सकल समाज।। ❑

मन होइए त्यागि दी

वसन विहीन तन तरुणीकेँ देखिकऽ
मन होइए पीबि ली खौलैत इनहोर पानिकेँ।
आनी हम मखान पात पोछी अपन मुँह हाथ
आगिसँ जुड़ाली हम दग्धल चाइनकेँ।।

कुन्तल कोमल मुख कमल उरोज देखि
विषसँ भरल कोनो वनिता विषाइनकेँ।
अंगमे उमंग मार अनंग उघार देखि
मन होइए त्यागि दी विचार लाज आइनकेँ।।

लाजो अछि लाचार एतए विवश विचार भेल
चम्पा आओर जुही चमेली अंग मधुपाइन-के।
काजरमे नहाली कालीख चुनकेँ लगाली हम
केस कान काटिकऽ भगा दी मिथिलाइन-के।।

शशिमुख श्वेत जेना दुधमे नहाएल छलि
भूखसँ भूखाएल अंग अंग रधिकाइनकेँ।
आँखिसँ चुराबी काजर लाली हुनक ठोरकेँ
विषसँ भरल बेवहार रसिकाइनकेँ।।

पयोधर पुष्ट मुदा हिरणी नयन छलि
कोंढ़ी कचनार सन रूप रसिकाइनकेँ।
रूपक बाजार बीच कटि कुसियार सन
रस टपकैत अंग गोर गणिकाइनकेँ।।

गोंतमे नहा दी गोबर गालमे लगा दी
आओर आँखिमे लगा दी मिरचाइ मलिकाइनकेँ।
तरुणीकेँ तनक तरंग तमसाएल सन
पवन चूमि अंग के खेलाइत छल डायनकेँ।।

थूकि आओर खखारी मुँह वेशकेँ बिगाड़ी हम
पंक टीका गालमे लगा दी गिरथाइनकेँ।
चीनी सन गोर रसगुल्लासन मीठ मुदा
हमहूँ भूखाएल आओर फँकने जमाइनकेँ।।

केस फहराइत आओर देह गमकैत छल
प्रकृति हँसैत देखि रूप धनिकाइनकेँ।। ❑

हम संघर्ष करैत रहब

हम करैत रहब संघर्ष सतत्
अधिकारक लेल इजोतक लेल।
हम लेसि देब सगरो डिबिया
रक्षार्थ अपन; निज लोकक लेल।
हम पहीरि लेलौं परिकर कटिमे
अछि रक्त हमर नहि शोषक लेल।
हम कर गहने टकुआरी छी

विपरीत आँखिमे भोंकक लेल।।
भुजदण्ड हमर सक्षम एखनो
संकट केर वेग केर रोकक लेल।
अछि देहमे रक्त बहुते एखनो
उत्सर्ग करब नहि जोंकक लेल।।
हम मैथिल पुत्र हिमालय छी
भण्डार अमिय केर स्रोतक लेल।
हम बुन्द देब नहि जल केकरो
जल पेय हमर, नहि घोंकक लेल।।
अछि लीची आम मखान पान
मिथिले सन स्वर्गमे भोगक लेल।
मिथिलो नहि रहती सिथिला
छनि देह दिव्य नहि शोकक लेल।। ❑

दामी चुनरी

मेला घुमै चललि बहिन बुधियारि दुइ
वयस वसन्तक वयार बहि गेल छल।
चितमे चकोर चारु; मनमे मधुर रस
नयन दुधारी चन्द्रहास बनि गेल छल।।

कंचन कुमारी कचनार सन लाल ललि
कटि कंठ कंचन कलश बनि गेल छल।
प्रेमक पनार बीच कामक पियास लागल
कामिनीकेँ कामक बोखार चढ़ि गेल छल।।

नारीक नितम्ब नाभि; पयोधर पुष्ट देखि
वायु वेग बहैत लाचार थमि गेल छल।
नयना निहारैत नयन अभिराम निज
मनक सुकमार भाव कुमारे रहि गेल छल।।

हाथमे रूमाल लाल विन्दिया विशाल भाल
कारी-कारी केश जनि जंघकेँ छुबैत छल।
ताबा सन तपैत देह, तनमे बोखार बेस
चातकी नयन निज तकैत शिकार छलि।।

कटि नाभी पेट पाँजर नितम्ब पहाड़ मार
सजल सजाओल बेश रूपक बाजार छल।
बड़की विचारिकऽबाजलि किछु कान लग
दुनू ठाढ़ भेली मनिहाराक दोकान लग।।

पुछल दोकानदार बहिन कहू की तकैत छी
सुन्दर सिङार साधन किएक नहि किनैत छी
चंचल नयन चकुआइत छलि चहुदिशि,
कामिनी बाजलि निज कन्तकेँ खोजैत छी।।

बहुतो वसन्त बितल कोमल शरीरमे
यौवन जरैत आगि खींचल लकीरमे।
हम सुकुमारि धनि धधकैत नारि छी
अंग अछि अङोर भेल बहैत बिहारि छी।।

तरल खमहाउर खाएब मेला बीच भीड़मे
लहकैत लाल लुत्ती चुनरी आओर चीरमे।।

अंग आगि आगि भेल; रस टपकैत अंग
खत्तामे नहाएब तावत ओकरे बुझब गंग।।

बहिन सम्हारि लियअ वयस बिहारिकेँ
करु जुनि शील भंग, तोड़ जुनि आड़िकेँ।
थालकेँ लगाउ जुनि, कोमल शरीरमे
दाग नञ लगाउ दामी चुनरी आओर चीरमे।।

पोखरि नहाकऽ राखू शीतल शरीर अंग
धरु मन धीर धनि नीकसँ नहाएब गंग।
चीत्त छहो छीत्त करब पंडित पुरानकेँ
पगड़ी आओर पाग छीनब जारब दोकानकेँ।।

सृष्टिकेँ सुडाह करब दहेजक दोकानकेँ
जारब दहेज लोभी बेटावाला शान के। ❑

तखने भेटत मिथिला राज

दलित दमित शोषित वंचित केर
सुनतै जे आवाज।
ओकर साधना पूर्ण हेतै
आओर भेटतै मिथिला राज।।
आब किओ बुड़िबक रहलै की?
धरतीक लाल सुनलकै जहिया
शोषित केर आवाज।
शोषित देलकै अपन मनसँ
हाथ उठाकऽ राज।।

आब चलाक कहू केकरा कहबै?
उपरेमे नहि अल्हुआ फड़तै
शोषित बनलै बाज।
जे देतै सम्मान ओकरा किछु
तेकरे भेटतै ताज।।
कहू किनका छनि पौरुष?
आश्वासन नहि सिंहासन लेब
हमर बात सुनियौ महराज।
वर्ग वर्णकेँ जखने छोड़ब
तखने बनत सकल केर काज।।
हम अपनाकेँ खोजि रहल छी
कहाँ? कतअ? हमर स्थान?
विनती बुधिहीन केर सुनियौ
मैथिल सकल समाज।
बूझि सूझिकऽ करू पुरष्कृत
तखने भेटत मिथिला राज।। ❑

मर्मक बात

मर्मक बात कहै छी मैथिल
ज्ञानक दीप मिझा रहलैए।
मानवता-के मोल कहाँ छै
कुकुरे आइ पूजा रहलैए।।
खेतमे उपजै द्वेष-दंभ छै
मनुखे मात्र कटा रहलैए।
आइ युधिष्ठिर केर दुर्योधन

धर्मक मर्म पढ़ा रहलैए।।
पामर-के पावर भेटल छै
निर्लज ज्ञान लुटा रहलैए।
जन-जनकेँ छै खोंट नेतमे
विषक वेल रोपा रहलैए।।
तुलसी फूल आओर अर्वा उसना
सभ संयुक्त कुटा रहलैए।
नैतिकता केर धर्मयुद्धमे
गंगापुत्र पिटा रहलैए।।
मन्दिर मस्जिदमे प्रसाद कहि
फुसियेँ बात बँटा रहलैए।
राजनीति स्वादिष्ट घासकेँ
चोर सिपाही खा रहलैए।।
द्वेष दंभ छल कृषि यज्ञमे
दुष्टे सभ उपजा रहलैए।
पापी नीच प्रपंची लोभी
स्वार्थक सेतु बना रहलैए।।
स्नेहक स्रोत सुखल छै जेकरो
कौशिल्या कहबा रहलैए।
कंश कसाइ आओर कालनेमि मिलि
नगरपाल कहबा रहलैए।।
चरण आचरण शिष्ट जेकर नहि
सजन श्रेष्ठ कहा रहलैए।
बौआक माय ठोकि बौआकेँ
भूखले पेट सुता रहलैए।। ❑

व्याकरण विष लगैए

हम इजोतक बात करै छी
मुदा अनहारे नीक लगैए।
समतामूलक मैथिल मिथिला
हमरा बहुते तीत लगैए।।
पाग पहीरि पावन कहबै छी
भ्रष्टाचारे मीठ लगैए।
श्रेष्ठ बुझै छी पंचम स्वरकेँ
गर्धप बाजब गीत लगैए।।
अपना मनसँ भाषा विद् हम
महज व्याकरण विष लगैए।
हम रटन्त विद्या केर मालिक
लेकिन व्याख्या कहाँ अबैए।। ❑

संकट मोचन

सुच्चा मैथिल ललकारि रहल।
सिंहासन अछि परतारि रहल।।
चाही हमरा किछु रोजगार।
हम सहब आब नहि अत्याचार।।
हम सभ मैथिलकेँ करब एक।
छी हरा देने हम बुधि विवेक।।
हम छी मिथिला केर क्रान्ति दूत।
हम छी सुच्चा मैथिल सपूत।।
अछि सभ मैथिल केर एक वेद।

हम मिटा देब जाति केर भेद।।
सुच्चा मैथिल संकट मोचन।
मिथिला केर उद्धार करत।।
पाग देखि जे नहि डरल ओ
दुष्ट देखि पगड़ी डरत।।
सुच्चा मैथिल केर अभियान।
पगड़ी रहतै महा महान।।
मिथिलाकेँ पड़ल इजोतक काज।
तूँ भाग दुष्ट अनहारक राज।।
अनहारक राजकेँ रोकक लेल।
उद्यत टकुआरी भोंकक लेल।।
सरकारक चोली देबै फारि ।
अश्लील अंगकेँ देब उघारि।
इ चलिते रहतै सतति अरारि।
की हमरा ओ सकत मारि?
ऐंठी ओकरे हम देबै झारि। ❑

हमहीं टा होशियार मात्र छी

साहित्यकार छला केओ दोसर
हम तँ चाटुकार मात्र छी।
वल-पौरुष बाँचल नहि किछुओ
फुसिञाही-के क्षात्र मात्र छी।।
साहित्यकार छला केओ दोसर
हम तँ चाटूकार मात्र छी।।
बापक नाम बेचि विश्वमे

लिखने फुसिञे शास्त्र मात्र छी।
कतेक दिन हम ठकबै केकरो
हम धरतीपर भार मात्र छी।।
साहित्यकार छला केओ दोसर
हम तँ चाटूकार मात्र छी।।
जननी जानि करै छी सेवा
मुदा लेब हम सेवा शुल्क।
पात्र बनब दुष्कर बेसी अछि
बेटा हम कुपात्र मात्र छी।।
साहित्यकार छला केओ दोसर
हम तँ चाटूकार मात्र छी।।
भव्य-भवन मिथिला धरती छलि
केलौं दूषित परिवेश ओकर।
जननीक आँचर फारि बेचै छी
विद्या छल पहचान जेकर।।
भाषा भूषित छल मिथिलाकेर
सुखलाहा हम धार मात्र छी।।
साहित्यकार छला केओ दोसर
हम तँ चाटूकार मात्र छी।।
कहू सर्वतोभद्रे मिथिला
केना भेल छी खंडहर।
सिंहासन सत्ता केर लोभमे
हमहूँ भेलौं छुछुन्नर।।
हम प्रपंची पातकी पामर
भोथहा हम हथियार मात्र छी।।
साहित्यकार...
दृष्टि दूषित; हम दुष्टशिरोमणि

मैथिलकेँ बूझै छी आन।
चरणकेँ वन्दक चारण छी हम
दृष्टिकोण अछि हमर अकान।।
छी कलंक मिथिलाकेर हमहीं
हमहीं टा होशियार मात्र छी।
साहित्यकार छला केओ दोसर
हम तँ चाटूकार मात्र छी।। ❑

कौआक पनचैती

कौआ केर पनचैती बैसल
पहीरि पाग अछि निर्णय भेल।
जनसेवाकेँ काज करि किछु
सत्ता लेल शतरंजक खेल।।
विष्ठापर अधिकार हमर अछि
विष्ठा पौष्टिक च्यवनप्राश।
लड़ि लड़ाकऽ खेलौं सभ दिन
गिद्ध नीतिपर एखनो आश।।
लोक कहाँ अछि बाँचल बुड़िबक
जे सुनि लितए बात हमर।
बुझलक हमर चलाकी सभटा
सावधान अछि गाम नगर।।
एक मात्र मार्ग अछि बाँचल
भाषापर किछु काज करी।
हम चलाक छिहें पहिनहिसँ
मिथिला राजक नाम धरी।।

हम कौआ मर्मज्ञ ज्ञानकेर
मुखिया मात्र रहब हमहीं।
ज्ञानक मात्र एक ठिकेदार हम
बाँकी सभ कनहा कनही।।
गुदा मार्गसँ बाजि रहल छी
गुदा मार्ग अछि देवक देल।
झुठ साँच किछुओ हम बाजब
करब चलाकी सत्ता लेल।।
हम किनको मैथिल नहि मानब
मैथिल मात्र हमर खनदान।
बाँचल आब प्रपंचेटा अछि
पापी पेटक करी निदान।।
हम छी दागल साँढ़ प्रतिष्ठित
ढेकरब अछि भाषाकेर मानक।
हम जे लिखलौं सत्य शुद्ध अछि
अछि अशुद्ध लिखल जे आनक।।
हम मैथिल छी महा मनस्वी
मिथिलापर हमरे अधिकार।
हमर दुष्टता जग जाहिर अछि
मिथिलाकेर हमहीं रखबार।।
घर्मक आड़िमे बैसि खेलौं हम
मलपुआ घृत आओर मलाइ।
दुरूपयोग केलौं क्षमताकेर
सत्ता छलि हमर भौजाइ।।
धर्मक नेता मिथिलाक नेता
सभ दलकेर हम नेता छी।
बुड़िबक लोक बात नहि बुझए

हम ज्ञानक विक्रेता छी।।
हम अनाथ छी,जगन्नाथ नहि
रूसली हमर अपन भौजाइ।
एकबेरि पुनि चालि चलब हम
मिथिला राजक देब दोहाइ।। ❑

मिथिलाक गरिमा

मिथिलाञ्चल विश्वमे
ज्ञान गरिमाक धाम छल।
सभ्यताक विस्तृत क्षेत्रमे
विद्वताक ठाम छल।।
नैतिकता केर बनिञा
जखनहि नगरमे जन्मलेल।
मिथिलाक संस्कृति संग पाण्डित्य
तखनहि विलुप्त भेल।।
विद्वताक स्थान ग्रहण कएने
शराब अछि।
मानवता-के माथपर
राक्षसताक दबाब अछि।।
समाजमे दहेजक आदान-प्रदान
प्रतिष्ठाक मापदंड अछि।
मानवता संग सामाजिक एकता
भेल खण्ड-खण्ड अछि।।
चौक चौकपर ज्ञान बिकाइए
पानक मात्र दोकानमे।

मनुष्य मात्र जन्म लैत छथि
महल आलिशानमे।।
वेद शास्त्र सभ हकन कनै छथि
शून्य श्मशानमे।
नीति आदर्शक दाम देखू
चाहक दोकानमे।।
वेदक चर्चागाह बनल अछि
गामक सभ मधुशाला।
युवक रूपकेँ सजा रहल छथि
पहिरकऽ मुण्डक माला।।
पश्चिमी सभ्यताक छटाकेँ देखू
तरुणि वयसकेँ वालामे।
मैथिली-मिथिला दहा रहल अछि
मधुशालाक नालामे।। ❑

हमर व्यथा

हमर व्यथा एकलव्य सनक अछि
हारल आओर झमारल।
कतेक दिन रहबै हम वंचित
जियब उपेक्षाक मारल।।
अंगुठा पहिनहि काटल गेल
हम ग्रसित छी कुण्ठासँ।
रखने छी हम प्राण देहमे
की आशा उत्कण्ठासँ।।
ठण्ठ बूझि कण्ठकेँ कटला

चण्ठ छला गुरूदेव हमर।
लण्ठे आखिर भेला किएक ओ
पामर छल की सभा सगर।।
हम अपन सर्वस्व लुटा देब
आब अंगुठा देब मुदा नहि।
सावधान हे गुरूवर हमरो!
अहुँ अंगुठा लेब मुदा नहि।।
एक हाथक अछि कटल अंगुठा
एक हाथक अछि बाँचल।
पौरुष पामर जाग दुष्ट तूँ!
आब दिमाग किछु नाँचल।।
गुरुवरकेँ न्यायिक चरित्र,
आओर रक्त चरित्रमे खामी।
तँए हमर अंगुठा कटलनि
प्रतिभा छल जे दामी।। ❑

सावन बीति रहल अछि

बहिना सावन बीति रहल अछि
एकसरि हम धनि विरहिन।

महुआ आम मजरिकऽ झरलै
तरसि रहल मन मीन।
रूष्ट विधाता वामे बैसल
शशिमुख हमर मलीन।।
बहिना...

तन-मन प्राण घवाह सनक अछि
नियति भविष्य कटाह हमर अछि।
प्रियतम परदेशी पहुँ दूरे
यौवन तेज विहीन।।
बहिना...

भूलुण्ठित गुम्फित अछि कुन्तल
करूणानिधि छथि निन।
मधुमातलि मदमातलि प्यासलि
बाजै विरहक बीन।।
बहिना...। ❑

मैथिल के?

माछी मैथिल मच्छर मैथिल
मैथिल मिथिलाक पवन वसात।
घास पात सेहो अछि मैथिल
काँटक सहित मखानक पात।।

चूड़ा दही चीनियों अछि मैथिल
तरूआ आ तिलकोरक पात।
अँमट अँचार सेहो अछि मैथिल
तुलसीफूल गमकौआ भात।।

पौरुष पगड़ी मैथिल मिथिला केर
मैथिल मिथिलाक अन्न जजात।

चोटी चानन दाढ़ी मैथिल
मिथिलानी केर मिलन मिलाप।।

चौरचन मैथिल अदरा मैथिल
मरूआ मैथिल पान मखान।
हमर विवाहक पद्धति मैथिल
कवि कोकिल केर गीतक तान।।

लगनी मैथिल झिझिया मैथिल
मैथिल मिथिलाक कन्यादान।
बाट चलैत बटगवनी मैथिल
मैथिल उगल कोजगरा चान।।

मुङरी माछक महको मैथिल
मैथिल छल बलचनमा।
ललचनमा अछि असली मैथिल
मैथिल अछि फूलचनमा।।

धनिकलाल मन्डल केर मिथिला
मिथिला अछि शलहेशक
सबसँ सुन्दर रसगर मीठगर
भाषा हमरे देशक।।

संस्कार संस्कृति मैथिल
मैथिल हमर प्रकृति।
हमर रजोखरि पोखरि मैथिल
हमर महीपक कृति।। ❑

सपनामे हम देखने छेलिऐ

धरतीपर जमीन नहि भेटल
किछु आकाशमे रोपने छेलिऐ।
मिथिला राजक दिव्य रूपकेँ
सपनामे हम देखने छेलिऐ।।

समतामूलक राज छलै ओ
अपन नयनसँ नपने छेलिऐ।
लाल लाल फल गाछमे लागल
मीठ छलै फल; चिखने छेलिऐ।।

कोनो क्षेत्रमे चोर छलै नहि
केकरो बहसल ठोर छलै नहि।
परिजन पुरजन एक छलै सब
शिष्ट समाजकेँ गढ़ने छेलिऐ

जाति भेद नहि; ज्ञान भेद छल
संविधान हम पढ़ने छेलिऐ।
जाति मात्र मैथिल मिथिलामे
ब्रम्ह सूत्रसँ बन्हने छेलिऐ।। ❑

मिथिला महात्म्य

माटि-पानिसँ बनल घर अछि
ममतासँ छारल परिवेश।
स्वर्गक कामना छोडू मैथिल
धन्य-धन्य अछि मिथिला देश।।

केना कऽ बिसरब हम गजहारा
केना कऽ बिसरब सपूत उमेश।
वाचस्पति-विद्यापति धामकेँ
तेजिकऽ जाएब केना विदेश।।

जोगी जनम लेबक लेल आतुर
जाहि धाम केर जनक नरेश।
जाहि धाममे सुग्गा वैदिक
थिक पुरातन मण्डन देश।।

अभिनव अछि जिनक पहिराबा
पैघ शिखा आओर रूप नरेश।
पनिहारिन बजैत संस्कृत अछि
पहरामे बैसल नागेश।।

जन्मल छथि एहि दिव्यभूमिमे
कवि-कोकिल, लोरीक-सलहेस।
आएल छलि आदि जगदम्बे
बेटी बनिकऽ मिथिला देश।।

सहजहिं सभ सहेजिकऽ राखब
मधुरी बोली मैथिल भेष।
मर्यादित भाषा वैभव अछि
भव्य-दिव्य अछि मिथिला देश।। ❑

गोत्र अछि विद्वानक हमरो

हम छी सुच्चा मैथिल भैया
शिष्टक हम सन्तान यौ।
हमरे पौरुषपर मिथिलामे
होइ छै साँझ-विहान यौ ।
देखु आइ उपेक्षित हमहीं
हम छी एखनो बारल ।
माँ मैथिली सेवक हमहीं
एखनोधरि छी टारल।।
करु हमर पनचैती भैया
हम जनकक सन्तान यौ।।
हम कृषक छी पान मखानक
हमहीं मरूआ धानक।
हमरेमे सलहेशक पौरुष
वंशज महा महानक।।
गोत्र अछि विद्वानक हमरो
सहब कतेक अपमान यौ
हमरे पौरुषपर...।।
कवि कोकिलक लेखनि हमरे

लोरीक केर लाठी सेहो।
बण्ठा वीरक वल हमरामे
दीनासन हमरे देहो।।
हमहीं दीना हमहीं लोरीक
सब गुणकेर हम खान यौ।
हमरे पौरुषपर...।
बहिन चनैनक धरती मिथिला
पोखरि कमल फुलाएल।
सलहेशक फुलबारी सींचल
स्वर्ग उतरि छल आएल।।
सीता सतवर्ती केर हमरो
भेटल अछि वरदान यौ।।
हमरे पौरुष..
गीतापर चिन्तन अछि हमरे
कृषि कर्म नगरे नगरे।
गहुम गीता धान वाणकेर
पाठ करि डगरे डगरे।।
व्रम्ह भेला याचक मिथिलामे
पाहुन छथि श्रीराम यौ।।
हमरे पौरुष...
पूर्वज हमर केलनि हरवाही
उपजल बेटी सीता।
बढ़ल मान मिथिलाकेर तखनहि
पावन परम पुनीता।
हमरे पूर्वजकेँ भेटल छनि
शिव शंभुक वरदान यौ।
हमरे पौरुष...। ❑

देखब हम सासुर केर भाड़

देखब हम नौआ
कुचरै छल कौआ
तपन बुझायब नयन जरै छल ।
नौआ संग-के देवर बौआ
केहेन पालकी केहेन कहार।।
देखब हम सासुर केर भाड़....

दिन बितै छल
युग सन सजनी
काल समान छल दिन आओर रजनी
भेल बलाय छल यौवन भार
देखब हम सासुर केर भाड़....

कञ्चन नुपुर नव वस्त्र पहिरब देख
पहुँन केर नयन जुड़ाएब
छल प्रतिक्षा बहुँत दिनसँ
मनमे सोचने छेलौं से पाइव,
हृदय बहै छल गर्म वयार।।
देखब हम सासुर केर भाड़....

मन छल विकल नयन छल पियासल
नहि कऽ सकै छेलौं हरिबासल
विष बढै छल बेसुमार।।
देखब हम सासुर केर भाड़....

प्रियतम भेल छला सम दुतिया
प्यासल मन छल आएल सेवतिया
जीवनमे नहि छल किछु सार
देखब हम सासुर केर भाड़....

देह जरै छल विरहानलमे
अस्य पीड़ छल मर्म स्थलमे
हृदय सूखै छल जेना पथार
देखब हम सासुर केर भाड़....

मन भयभित रहै छल
सदखन आँगनमे
आओर भीतर-बाहर
नित मंजन करैत छेलौं हम
काटिकऽ दँतमनि भाँटी आओर साहर
नहि भावै छल वादय सितार।।
देखब हम सासुर केर भाड़....

कमल सदृग तारुण्य कोमल
छल वेश भेल छल कुसुम समान
मारि रहल छला युवकगण सब
बाट धाटमे नयनकेँ बाण
नहि कऽ सकै छेलौं प्रतिकार।।
देखब हम सासुर केर भाड़....

भैया - भौजी देखवैत छला
हरदम हमरा अपन गुमान
हम सोचैत छेलौं कहिया आओत

हमरा जीवनमे नव विहान
पिता करै छला
वचन प्रहार।।
देखब हम सासुर केर भाड़....

परसब हम अपना टोल-पड़ोसमे
खीर मिष्ठान आओर पकमान
हृदय करै छनि स्वागत हुनकर
पहिरब हम नव-नव परिधान
तुकि लेबऽ बाजऽ कहार।।
देखब हम सासुर केर भाड़....

रंग विरंग तरकारी तरि कऽ
करबनि हुनक खतिरमान
छत्तीस व्यंजन सजा देवनि हम
कते खेता अतिरिक्त मेहमान
मंगल गाबि रहल अछि मनुआ
हृदय भेल अछि जेना पहाड़।।
देखब हम सासुर केर भाड़....

शास्त्र पुरानक उक्ति कहै छथि
पहुँ होइय परमेश्वर
हमरा नहि चाही अलंकार
ओ स्वयं छथि रत्नेश्वर
आँचरसँ हुनक डगर बहारब
रचि रचि सोलह श्रृंगार
देखब हम सासुर केर भाड़....

मन-वीणा केर तार टूटल छल
गरमीमे लागै छल जाड़
बेली पुष्पसँ सेज सजायब
आँजू पहुँ संग करब विहार।।
देखब हम सासुर केर भाड़.... ❑

मैथिलीक महत्व

मैथिली हमर खगता अछि
मैथिली हमर वेगरता अछि।
मैथिली हमर प्राण अछि
सब रोगक निदान अछि।।

मैथिली हमर मोक्षदायिनी
मैथिली हमर मातु जायिनी।
मैथिली हमर कान अछि
आँखि नाक आ मान अछि।।

मैथिली हमर सम्पत्ति अछि
मैथिली हमर जमीन अछि।
मैथिली हमर समृद्धि अछि
शान्ति कान्ति आ नीन अछि।।

मैथिली हमर ध्येय अछि
मैथिली पाथेय अछि।
मैथिली हमर गेय अछि
अमृत आ पेय अछि।।

मैथिली हमर ज्ञान अछि
विद्वताक सीमान अछि।
मैथिली हमर विमान अछि
मैथिली हमर अभियान अछि।।

मैथिली हमर आश अछि
मैथिली हमर विश्वास अछि।
मैथिली हमर वसन्त अछि
मैथिली हमर खास अछि।। ❑

केतए नुकाएल छी

कामिनी कंचन केर हम कानन ओझराएल छी
प्यासल और भुखाएल छी ना ।

पुरुष पहुँ बुझाए नहि छी बात
यौवन हरियर सनक जजात
पहुँ यौ गल्ती की भेल हमरापर तमसाएल छी
हिरणी हम डेराएल छी ना...

हम नारी अहिंक नकारल
अहाँकेँ बुद्धि गेल अछि मारल
हम तँ मन्द सुगन्धित माला जकाँ सुखाएल छी
बाट किएक बिसराएल छी ना.....

हमरा बाँझीन लोक कहैए
नयनसँ झर्झर नीर बहैए

प्राण पहूँ कोन डायनक मायामे भुलाएल छी
चन्दा केतए नुकाएल छी ना...

अकिलक खोलू ने अलमारी
यौवन सजल फूलल फुलवाड़ी
हम तँ गंगा जलसँ माजल धोल पखारल छी
कुर्वक भाण्ड खराजल छी ना...

अहूँ समटि लियऽ सब भाभट
हमहूँ बिसरब बात विषादक
हमरा रोम-रोममे अहि मात्र समाएल छी
फुलक गाछ उखारल छी ना...

अहि छी पति हमर परमेश्वर
एहिमे बात ने किछुओ दोसर
हम तँ शरणागत छी चरण शरणमे आएल छी
ब्रत केने हरिबासल छी...

शत-शत नमन करू स्वीकार
किएक भेल कुण्ठित कुटिल विचार
हम तँ घघसल गहुँमक
पछवा पवन झमारल छी
सुखल और ठठाएल छी ना...। ❑

इतिहासक अनुपम पन्ना

इतिहासक अनुपम पन्नामे,
घटना भरल अछि अनेक।
करमौलीमे रहि रहल छलि,
मदनी नामक पिलिया एक।।
भूखसँ वेकल बेचारी पिलिया,
चोरि करै छलि जूता।
देने जबाब छलै रानीकेर
अपन शरीरक बूता।।
एक दिन आएल छला घरमे
सहमेलु नवीन श्रीमान।
के छुअत हमर जूताकेँ
हुनका छलनि वेश गुमान।।
उचित स्थान राखू जूता-के
मदनी लए चलि जाएत।
छुधा तृप्त नहि हेतै गरीबक
रुचि रुचि भोग लगाएत।।
हमर बातकेँ टारि महामन
फोलिकऽ जूता रखला।
आँखि मिरैत उठला भोरहिं तँ
जूता के नहि देखला।।
पाबि बुढ़ापाकेँ ओ बेचारी
व्याकुल घुमैत रहै छलि।
आहत तन आओर मनकेँ लए ओ
अपन मृत्यु मनबै छलि।

नेना उकाठी लएकऽ लाठी
ओकरा नित ताड़ैत छल।
मारि खाय लाठी पीड़ासँ
नोर नित बहबै छल।।
भरि जवानी केलक फुटानी
मद् मे मस्त रहै छलि।
देखितहिं चोर उचक्काके ओ
पस्त रेवाड़ि करै छलि।।
गामक बाँसक सघन बीटमे
पिलिया के छल डेरा ।
चामक जूता छल ओकरा लेल
बनल दूधक पेरा।।
जूता चोरीक ई घटना
कइक बेर पहिलों छल भेल।
सुनिकऽ गामक वुद्धिजीवीगण
नाना रंगकेर उपमा देल।।
केओ कहै छल चोरक काज थीक
केओ कहै छल देवीक।
केओ कहै छल ई सभ किछु नहि
इ थीक काज फरेवीक।।
गाममे किछु उपनयनक बरूआ
छला बेस उताहुल भेल ।
करु उपनयन हमर यौ बाबू
वर्षक नीक शुद्ध बीति गेल।।
नगर खलीफा महेन्द्र मिश्रजी
कुरहैरि कान्ह लेलनि सम्हारि।
गीत गबैत सभ पंचम सुरमे

चलली सुहागिन नगर केर नारि।।
बाँसक बीटमे जाय पहुँचलनि
मंगल गीत समाप्त भए गेल।
पिलिया चाम चिबाबैत बैसल
बहुतों जूता ढ़ेरी भेल।।
जूता चोरिक सम्बन्धमे
किंबदन्ती मिथ्या भेल।
धाड़-धाड़ सब कहलनि मिलिकऽ
पिलिया बीटसँ बाहर गेलि।।
बाँस काटि गृहनगरमे लाबि
शीघ्रहिं मरबा ठाठल गेल।
सजबी दूधक दही पौरल
ओरिकासँ घृत परसल गेल।।
होइत समाप्त उपनयनक भोज
पिलिया पहुँचलि निज परम धाम।
ओकरा प्रति कृतज्ञ समाज अछि
लोक जपैए मदनीक नाम।। ❑

मुदा आब सभ जागि गेल अछि

मैथिली ज्ञान आओर शिक्षा-साहित्य
आई भेल अछि हरियर घास
साँढ़े मात्र चरैए जिनका
दुर भेल छथि मैथिल खास
मैथिली-मिथिला केर सपूत सभ
फाँकि रहल छथि घूरा,

सम्मानित होइ छथि ओ- बेसी,
जे छथि लोक बेलुरा
विद्यापतिजी भेला खेलौना,
किछु मैथिल छथि बेचनिहार ।
माँ मैथिली केर बेटा देखू
माइयक चीर हरण केनिहार।।
पुरष्कार साकार होइत अछि,
ऊँच हवेली राज निवास।
माईट-पानि छोड़ि पुष्पित अछि,
किछु मैथिल केर फूल आकाश
अक्षर केर अछि ज्ञान ने कनिऔ,
ओकरे झण्डा छइ फहराइत।
लातसँ लत खुरदन होइ छथि
ठाढ़ भेल जे शिष्ट पछाइत
महा मदारी बजा रहल अछि
डमरू ओ झुन-झुन्ना
आगिमे ऐंठल जरा रहल अछि
दुष्ट शिरोमणि जुन्ना
मैथिली-मिथिला अछि अपियारी
सभ दिन फँसलै रोहु-बुआरी
मुदा आब सभ जागि गेल अछि
सभकेँ चाही माछ-बुआरी
महा-महत्व अछि पान-मखानक
उत्पादक केर की स्थान
झनु-झुन्ना जे-बाजि रहल अछि
तेकरो कने सुनु श्रीमान।।। ❑

हमर मनोरथ

घर-घर बास करै छथि लक्ष्मी
सरस्वती चहुओर
साग गेनहारीक बारीक उपजल
लतरल अछि तिलकोर।।
अल्पाहार अछि दधि चिपटान्नम
बोली मधुर समान।
षटरस युक्त अँचार आमकेर
मिथिला भूमि महान।।
हमर मनोरथ अछि मिथिलामे
खेतमे हलसैत धान रहय।
घर-घर ईद दिवाली पूजा
हर मैथिल मुख पान रहय।।
देह वस्त्रसँ झाँपल देखी
जन-जन एक समान रहय।
उपनिवेश भूखक नहि देखी
हर घर मड़ुआ धान रहय।।
समतामूलक मिथिला देखी
करूणा ममता ज्ञान रहय।
जन-जन वेद पढ़थि सभ मैथिल
विश्व मंचपर मान रहय।।
हमर मनोरथ...।

मनन संग चिन्तनकेर चानन
सखम सबहक कान रहय।

कमल पुष्प देखी पोखरिमे
पसरल पान मखान रहय।।
ललन विष्णु ललना लक्ष्मी बनि
बेटी वीणा पाणि रहय।
घर-घर गीत सलहेसक लोरीक
विद्यापतिकेर गान रहय।।
हमर मनोरथ...।

जगत केर जननी बहिन जानकी केर
मिथिलामे मान रहय।
भावसँ बान्ही हम भव्याकेँ
विधिवत् ब्रह्म बन्हाएल रहय।।
कृषि-काननकेर यज्ञ करी मिलि
पावनि नित्य नवान रहय।।
मंच प्रपंचक नहि देखी हम
शीतल नवल विहान रहय।।
हमर मनोरथ...। ❑

बेटीक व्यवहार

हमर व्यथा सुनियौ मैथिल जन,
जन्मे हमर निरर्थक भेल।
के दोषी? केकरा हम कहबै?
अद्भुत अछि प्रारब्धक खेल।।
पुत्र बूझि पुत्री के पोसलहूँ,
पुत्रक जखन जनम नञि भेल।
पढ़ा लिखा बी ए करबेलहुँ,
पाइ प्रयास पानि मे गेल।।
लात बात सँ स्वागत होइए,
बेटी सँ सुख एतबहिं भेल ।
लाते हमर कपार मे लिखल,
के टारत दुख विधिना देल।।
बरदक सानी लात बात संङ,
भेटि रहल भरिपेट्टा।
नाथल छी गरदामी दामी ,
खूब खोंचाह छै खुट्टा।।
खट्टा तोड़ि जे भागि सकब से,
सामर्थो नञि बाँचल।
देह घवाह माछी भिनकैए,
मन बहुते अछि चाँछल।।
गर्दनि मे कौरी देने अछि,
नीक लगैए गाँथल।
बेटी आऔर दौहित्रक ममता,
नञि क्षमता अछि बाँचल।।

आँखि मुइन हम नित्य पीबै छी,
निशि वासर अपमानक घोंट।
बिगरल हमर विधाता बहुते,
नमहर हमर भाग्य मे खोंट।।
बेटी आऔर दौहित्रक ममता,
गंजन के छी कारण।
क्षमता नञि बाँचल अछि किछुओ,
स्वार्थक स्नेह अकारण।।

बेटीसँ सम्बन्ध कहाँ छल?
महज मात्र अनुबन्ध छलै ओ
बितलै दिन काल अनुबन्धक
सम्बन्धो आब नहि रहलै ओ।।

बेटीक स्वर्ग महल बेटीक लेल,
हमरा लेल दावानल।
स्वाभिमान संङ देहो थुरल,
अन्नो भेल हलाहल।। ❑

Notes

बद्री नाथ राय 'अमात्य'

श्री बद्री नाथ राय 'अमात्य'
जन्म तिथि : 24 जून 1963
पिताक नाओं : स्व. जयदेव राय
माताक नाओं : स्व. सरस्वती देवी
पत्नीक नाओं : श्रीमती चन्द्रकला देवी
पता : ग्राम+पोस्ट- करमौली, भाया-कलुआही, थाना-खजौली, जिला- मधुबनी।
मातृक : धरमपुर, धनुषा (नेपाल)
जीविकोपार्जन : कृषि
रूचि : साहित्य लेखन
मोबाइल नं. : 6205190859, 9717815472

बद्री नाथ राय 'अमात्य' क 'मैथिल भैया करू विचार' बुद्धिनाथ मिश्र जी केर पद्य जकाँ झनझनाइत बजैए, सुमधुर, लय आ तुकबन्दी युक्त, गेय। मुदा ई समानता ओतहि खतम भऽ जाइए, आ जे विपरीतता अबैए से अछि ऐ संग्रहक विषय वस्तु, आ तकर अँखिगर निरीक्षण। आ से अछि बद्री नाथ राय 'अमात्य' क आँखि आ खून दुनूक पॉजीटिव हेबाक कारण, आ से ए बी ओ बा एबी पॉजिटिव नै अछि, ई अछि मिथिला पॉजिटिव। खूनो नै रङो मिथिला केर छन्हि, जातिवादीक उज्जर केश 'डाइ' करा देता मिथिला केर रङमे, जे ओ घोरने छथि।

तन-मन जे घवाह भेल छन्हि आ पोसल कुकुड़ कटाह भेल छन्हि तकर उत्तर चाहियन्हि कविकें, आ से उत्तर मैथिलेसँ चाही हुनका। रसक ज्ञानीयेकें ओ रसखान कहता। मुदा मात्र प्रश्ने नै ठाढ़ करै छथि, उत्तरो दइ छथि- कादो करब घास के गारब/ अगिला खेती धान करब हम।

बद्री नाथ राय 'अमात्य' विशाखादत्तक मुद्राराक्षसक अमात्य मोन पाड़ि देलन्हि।

- गजेन्द्र ठाकुर
सम्पादक, विदेह ई पत्रिका www.videha.co.in

पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

मूल्य- 200/-

ISBN: 978-93-93135-46-9